ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मई-२०१८

मई-२०१८ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक १२ ◆ उदयपुर

भूत-प्रेत सब,
भ्रमजाल है।
स्वार्थी लोगों की,
ये चाल है।
बुद्धिशील इसमें नहीं फसते,
ऋषि दयानन्द सत्य ही कहते।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ७७

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११९
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी
विक्रम संवत्
२०७५
दयानन्दाब्द
१९४

May - 2018

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) 2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) 1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) 750 रु.

समाचार २६
हलचल २७

०४ वेद सुधा
०६ राम का राज्याभिषेक कब?
१० Conference on Cosmology
११ सद्गुरु दयानन्द
१६ अहंकार का त्याग
१८ वीर छत्रपति शम्भा जी
२० सृष्टि का रचयिता है।
२२ सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०५/१८
२३ 'लिवे देबते' Live Debet
२४ वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप
२५ शून्य होती संवेदनाएँ
२८ स्वास्थ्य- जिन्दगी चुनें तम्बाकू नहीं
२९ कथा सरित- जीवन की सार्थकता
३० सत्यार्थ पीयूष- ईश्वर के कार्य

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ६ | अंक - १२

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

बोध और प्रतिबोध

ऋषी बोधप्रतीबोधावस्वप्नो यश्च जागृविः।
तौ ते प्राणस्य गोप्तारौ दिवा नक्तंच जागृताम्। - अथर्व. ५/३०/१०

(बोध-प्रति-बोधौ) ज्ञान और विवेक (ऋषि) दो ऋषि {हैं}। (यः) जो तू {बोध का रख} (अ-स्वप्नः) न सोने वाला (च) और {प्रतिबोध को रख} (जागृविः) जागरूक। (ते प्राणस्य गोप्तारौ तौ) तेरे प्राण के रक्षक वे दोनों {ऋषि} (दिवा च नक्तम्) दिन और रात (जागृताम्) जागते रहें।

१. ज्ञान मस्तिष्क की सम्पदा है। विवेक आत्मा की सम्पदा है। ज्ञान नेत्र है। विवेक प्रकाश है। नेत्र होते हुए भी मनुष्य ठोकर खाता है, जब प्रकाश नहीं होता है। ज्ञानी भी ठोकर खाता है, जब आत्मजागरण नहीं होता है। ज्ञानी कनिष्ठ है। विवेकी ज्येष्ठ है। बड़े-बड़े ज्ञानी दुष्कर्म कर बैठते हैं, जब विवेक का दीपक नहीं जल रहा होता है।

कौन नहीं जानता है कि पाप क्या है और पुण्य क्या है, धर्म क्या है और अधर्म क्या है, उचित क्या है और अनुचित क्या है? फिर भी मानव वह कर गुजरता है जो नहीं करना चाहिए। कारण स्पष्ट है। जब विवेकदीप बुझा होता है तो ज्ञानी अनर्थ कर बैठता है। महत्व उतना ज्ञान का नहीं है जितना विवेक का है। विवेक ही है जो सर्वस्व की रक्षा करता है। '**नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रम् इह वर्तते**', यहाँ इस संसार में ज्ञान के समान अन्य कोई वस्तु पवित्र नहीं है। ज्ञान पवित्र है किन्तु विवेक के बिना केवल ज्ञान कहीं भी धर्म, कर्म, कर्तव्य और जीवन की रक्षा करने में सर्वथा असमर्थ है।

वेदमाता इस मंत्र में आपको एक अतिशय दिव्य सन्देश दे रही है। मानव! तेरे जीवन में दो ऋषि बैठे हुए हैं। यदि तू उनके ऋषित्व को भंग न करे तो वे तेरे जीवन की रक्षा करके तुझे जीवन की उच्चतम ऊँचाई पर पहुँचा सकते हैं। वे दो ऋषि हैं बोध और प्रतिबोध।

बोधन न बुद्धि का विषय है, न मन का, न चित्त का। वह तो आत्मा का विषय है। ऋग्वेद (५.१०.४) में कहा गया है, बोधति त्मना। मानव (बोधति) बोध प्राप्त करता है (त्मना) आत्मना। बुद्धि का कार्य चिन्तन करना है, मन का मनन करना, चित्त का चेतना। आत्मा में बोध होता है तो चिन्तन, मनन और चेतना की दिशा ही बदल जाती है।

बोध की प्रतिक्रिया ही प्रतिबोध है। प्रतिबोध का अर्थ है विवेक। बोध ही विवेक का जनक है। बोध क्या है? सुप्त आत्मा का विचार अथवा घटना-विवेचन से सहसा जाग जाना। आदमी गहरी नींद में सोया हुआ है। कोई धमाका होता है और वह एक दम जाग पड़ता है। इसी प्रकार, विचार वा घटना-विशेष से आत्मा जाग जाता है। मृत्यु की एक घटना ने गौतम बुद्ध और दयानन्द के आत्मा को जो बोध प्राप्त कराया उससे उनको उस विवेक की प्राप्ति हुई उसका नाम प्रतिबोध अथवा विवेक है। शिवपिण्ड पर चूहों की उछल-कूद के दृश्य ने दयानन्द की आत्मदृष्टि को बदलकर जो बोध प्राप्त कराया उससे उसे जिस प्रतिबोध की सिद्धि हुई उसने उसके जीवनचक्र को बदल दिया।

बोध आत्मा की स्वप्नशीलता को अस्वप्न में, और प्रतिबोध आत्मा की आत्म-विस्मृति को आत्मजागरण अथवा आत्म-अवस्थिति में परिणत कर देता है। बोध और प्रतिबोध की प्राप्ति पर, उन्हें आत्मसाधना द्वारा अक्षुण्ण बनाए रखने की आवश्यकता होती है। वैसा किए बिना बोध का लोप हो जाता है। बोध का लोप होने पर प्रतिबोध (विवेक) का चिराग क्षणमात्र में बुझ जाता है। मृत्यु की घटना ने बुद्ध और दयानन्द को ही बोध प्राप्त नहीं कराया था। मृत्यु तो सभी को बोध प्राप्त कराती है और उस बोध के परिणामस्वरूप सभी को प्रतिबोध की उपलब्धि होती है। किन्तु आत्महीनता के कारण श्मशान से लौटते ही दोनों ऋषि गायब हो जाते हैं।

बोध का लोप होने पर आत्मा पुनः स्वप्नस्थ होकर आत्मविस्मृति की गाढ़ निद्रा में लीन हो जाता है और प्रतिबोध हवा हो जाता है। अतः वेदमाता कहती है, मानव! बोध और प्रतिबोध, ज्ञान और विवेक, ये दो युगल ऋषि हैं। अपने जीवन में तू इन्हें एक

दूसरे से पृथक् न होने दे। विवेक ज्ञान के बिना सफलकाम नहीं हो सकता है, ज्ञान विवेक के बिना अपने ऋषित्व को गंवा बैठता है और अनर्थकारी सिद्ध होता है।

आगे चलकर वेदमाता पुनः कहती है, मानव! तू ज्ञान को कभी सोने न दे और विवेक को सदा जगाए रख। ज्ञान जागता रहे, विवेक जागता रहे तो दुर्दिनत्व सदा दूर भागता रहे।

ज्ञान और विवेक, ये दोनों ऋषि मानवप्राणी के रक्षक हैं। प्राण से तात्पर्य यहाँ जीवन से है। सदुपयोग में ही जीवनधन की रक्षा है। जीवन के एक-एक क्षण का उपयोग शुभ और श्रेष्ठ के लिए हो। इसी में जीवन की सार्थकता है और इसी में जीवन की सुरक्षा है। जीवन सदा निरोग, स्वस्थ और निर्दोष रहे और उससे धर्म और मोक्ष की सिद्धि हो। जीवन की पूँजी से सम्पादनीय वास्तविक लाभ यही है। इसी में जीवनपूँजी की रक्षा है। यह तभी होता है जब ज्ञान और विवेक, दोनों ऋषि मानवजीवन में अनवरत जागते रहते हैं। प्रत्येक रात्रि और प्रत्येक दिन ज्ञानविवेकपूर्ण कर्मसाधना में व्यतीत हो। ज्ञानशून्य और विवेकहीन व्यक्तियों की रात्रियाँ भोगविलास में कटती हैं, तो उनके दिन व्यर्थ व्यासंगों में बीतते हैं। ज्ञान और विवेक से सम्पन्न व्यक्तियों की रात्रियाँ योगरात्रियाँ होती हैं, तो उनके दिन साधनादिवस होते हैं। उभय ऋषित्व से निष्पन्न जन रात्रि में आरोहण करते हैं और दिन में आक्रमण। आरोहण और आक्रमण तब ही सम्भव होता है जब मानव अपने ज्ञान और विवेक को निरन्तर जागरूक रखता है। वे जब क्रमशः निरन्तर अस्वप्न और जागरित रहने लगते हैं तो जीवन की रक्षा होती है, जीवन बर्बाद न होकर आबाद और शाद रहता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को आत्मसाधना द्वारा उन्हें दिन-रात जागरित रखना चाहिए। इन दोनों ऋषियों को सदा जागरित रखने के तीन ही उपाय हैं- आत्मनिरीक्षण, आत्मचिन्तन, तत्त्वचिन्तन।

> **"जीवन के एक-एक क्षण का उपयोग शुभ और श्रेष्ठ के लिए हो। इसी में जीवन की सार्थकता है।"**

आत्मनिरीक्षण का अर्थ है अपनी ओर देखना। दूसरों की ओर देखने से बोध और प्रतिबोध तिरोहित हो जाते हैं। संसार अनुचित साधनों से मालामाल होकर ऐश की बंशी बजा रहा है, मैं भी वैसा ही क्यों न करूँ- ऐसी दुर्भावनाएँ दूसरों की ओर देखने का ही परिणाम हैं। अपने पर सतर्क दृष्टि रखिए और सावधानी के साथ बोध की ज्योत्स्ना और विवेक के प्रकाश में अपना निरीक्षण करते रहिए।

आत्मा ही जीवन है। आत्मा से ही जीवन है। आत्मसाधना के लिए ही शरीर है। आत्मा अमृत है, मरणरहित है। शरीर मृत है, मरणधर्मा है। कोई कार्य ऐसा नहीं करना है जिससे आत्महानि, आत्महनन और आत्मह्रास हो। ऐसे चिन्तन का नाम आत्मचिन्तन है। आत्मचिन्तन से बोध की ज्योत्स्ना और प्रतिबोध का प्रकाश सतत् जगमगाते रहते हैं। परिणामस्वरूप, आत्मा अनवरत आत्मस्वरूप में अवस्थित रहता है।

प्रत्येक क्रिया और वस्तु में सार कितना है, वास्तविकता कितनी है, इस चिन्तन का नाम तत्त्वचिन्तन है। हर समय, हर बात में वास्तविकता और अवास्तविकता की अनुभूति का नाम तत्त्वचिन्तन है। तत्त्वचिन्तन से आप निस्सार से मुक्त और सार से युक्त रहेंगे।

- स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

(साभार- वेदालोक-द्वितीय रश्मि)

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार)

भूत-प्रेत होते हैं या नहीं यह आज भी विवादित माना जाता है जबकि विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली है कि यह कहना अनुचित न होगा कि उसने सभी सीमाओं को लाँघ लिया है, ऐसे समय में भी भूतों की अवास्तविक सत्ता में लोग विश्वास करते हैं, यह आश्चर्य का विषय है।

यह आज तक किसी तर्क अथवा वैज्ञानिक परीक्षण से सिद्ध नहीं हो पाया है कि भूतादि की सत्ता होती है परन्तु संस्कारवश इनकी सत्ता को स्वीकारने वालों की संख्या भारत में ही नहीं विश्व भर में कम नहीं है। भारत की तो बात क्या करें जहाँ गत एक डेढ़ सहस्र वर्षों में समस्त असम्भव, सृष्टिक्रम के विरुद्ध बातों को बिना बुद्धि का प्रयोग किये आदतन मानने का रिवाज बन गया है। एक अनुमान के अनुसार अमेरिका जैसे देश में भी ३५ से ४० प्रतिशत लोग भूतों की सत्ता पर विश्वास करते हैं। यद्यपि प्रायः सभी मामलों में इन विश्वास करने वालों ने कभी वास्तव में भूत को नहीं देखा है। गत एक लेख में हमने ऐसी घटनाओं का उल्लेख किया था जहाँ ऐसे-ऐसे वीडियो सोशल मीडिया पर चल रहे थे कि जिन्हें देखने से लगता था कि भूत होते हैं, परन्तु जब उनकी जाँच की गयी तो सभी को असत्य पाया गया। इन असम्भव तथा काल्पनिक बातों को सत्य साबित करने का प्रयत्न करने वालों का क्या उद्देश्य है सही-सही तो वे ही जानें परन्तु वे समाज को बौद्धिक विनाश की ओर धकेल रहे हैं और ऐसा करके पाप कर रहे हैं यह कहना समीचीन है।

आज आशंकित, त्रस्त तथा जघन्यतम कुकृत्यों की शिकार मानवता के त्राण के लिए तो भगवान सशरीर प्रकट हो नहीं रहे परन्तु एक महा-मन्दिर में पत्नी पार्वती के साथ रोजाना प्रकट हो चौसर खेलते हैं यह मीडिया द्वारा दिखाया जा रहा है। पहले से ही काल्पनिक और असम्भव बातों को 'सत्य वचन महाराज' की मानसिकता में डूब, स्वीकार करने वाली जनता को हमारा तथाकथित रूप से 'जिम्मेदार' मीडिया कहाँ ले जाकर खड़ा करना चाहता है? वे इसे खोजपूर्ण पत्रकारिता का नाम देते हैं, परन्तु क्या यह प्रयोग पूर्ण वैज्ञानिक तरीके से किया गया? जी नहीं।

ऊपर हमने जिस रिपोर्ट की ओर संकेत किया है उसे एक चैनल पर कुछ समय पूर्व दिखाया था। एक प्रसिद्ध मंदिर के गर्भगृह में एक तख्त पर चौसर बिछी है जिसपर सभी गोटियाँ करीने से रखी हैं। रात को गर्भगृह को बन्द कर ताला लगा दिया जाता है। मुख्य द्वार को भी बन्द कर ताला लगा दिया जाता है। इस सब की लाइव रिकार्डिंग की गयीं। सुबह मीडिया रिपोर्टर्स के

समक्ष सभी दरवाजे खोले जाते हैं। गर्भगृह में चौसर थी पर उस पर की गोटियाँ कुछ बिखरी हुयीं थीं तथा कुछ की स्थिति रात्रि की अपेक्षा भिन्न थी। घोषित कर दिया गया कि रात्रि को शिव जी पार्वती माता के साथ आये थे तथा चौसर खेली थी। यहाँ मुख्य बात यह है कि गर्भगृह में ६ सीसीटीवी लगे हुए हैं इन्हें रात को बन्द कर दिया जाता है। ऐसा होने के कारण इस सम्पूर्ण रिपोर्ट तथा उससे निकले तथ्य को असंदिग्ध नहीं कहा जा सकता। इस पूरी रिपोर्ट को किसी भी प्रकार से वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता। हमारे एक मित्र की टिप्पणी क्या अनुचित थी कि जिस देश में प्रतिदिन सैंकड़ों-सहस्रों मासूम बेटियाँ बर्बरता का शिकार हो जाती हैं वहाँ अगर भगवान अवतरित भी होते हैं तो चौसर खेलने के लिए, यह असंवेदनशीलता की हद है। {वैदिक सिद्धान्तानुसार भगवान किसी भी अवस्था में सशरीर अवतरित नहीं होते उनके बनाए अटल नियम ही निरन्तर सृष्टि में क्रियाशील रहते हैं।} तो असम्भव तथा सृष्टिक्रम से विरुद्ध जो भी बातें हैं उन्हें मानव-मन से निष्कासित करने का प्रयास ही श्रेष्ठों को योग्य है न कि उनको प्रोत्साहित करना या प्रश्रय देना। भूतों का अस्तित्व भी इसी में आता है। इस विचार को बचपन से ही हतोत्साहित करके बालक के मन-मस्तिष्क से मिटा देना चाहिए।

देखिये महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं- 'तब मृतक शरीर जिस का नाम प्रेत है , उसका दाह करने हारा शिष्य प्रेतहार अर्थात् मृतक् को उठाने वालों के साथ दशवें दिन शुद्ध होता है। और जब उस शरीर का दाह हो चुका, तब उसका नाम भूत होता है अर्थात् वह अमुकनामा पुरुष था। जितने उत्पन्न हों वर्त्तमान में आके न रहें, वे भूतस्थ होने से उनका नाम भूत है। ऐसा ब्रह्मा से लेके आज पर्य्यन्त के विद्वानों का सिद्धान्त है। परन्तु जिसको शंका, कुसंग, कुसंस्कार होता है, उसको भय और शंकारूप भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी आदि अनेक भ्रमजाल दुःखदायक होते हैं। देखो, जब कोई प्राणी मरता है, तब उसका जीव पाप-पुण्य के वश होकर परमेश्वर की व्यवस्था से, सुख-दुःख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नाश कर सकता है? अज्ञानी लोग वैद्यकशास्त्र वा पदार्थविद्या के पढ़ने-सुनने और विचार से रहित होकर सन्निपात ज्वरादि शारीरक और उन्मादकादि मानस रोगों का नाम भूत प्रेतादि धरते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ३०)

हम समझते हैं कि भूत-प्रेत की समस्या को सुलझाने की दिशा में यह सर्वश्रेष्ठ प्रयास है। इसीलिए महर्षि दयानन्द आगे इस बात पर जोर देते हैं कि इस प्रकार की मिथ्या बातों के संस्कार बालक-बालिका के चित्त पर न पड़ें इस बात का माता-पिता को विशेष प्रयत्न करना चाहिए। ऋषि के इस निर्देश की अवहेलना करने का ही परिणाम है कि न सिर्फ अशिक्षित वरन् उच्च शिक्षित तथा उच्च पदों पर बैठे जन भी भूत-प्रेत जैसी अवैज्ञानिक धारणा को अपने संस्कारों में धारण किये बैठे हैं यही कारण है कि जिन विधायकों पर समाज में तर्काधारित वातावरण सृजित करने की जिम्मेदारी भारतीय संविधान विशेष रूप से डालता है उन्हीं के जमावड़े में अपवादों को छोड़ व्यापक रूप से भूत की उपस्थिति और उनसे निपटने के उपायों पर विचार किया जाता है। जी हाँ हम राजस्थान विधान सभा की ही बात कर रहे हैं।

राजस्थान का वर्तमान विधानसभा भवन अत्यन्त सुन्दर भवन है। पूर्व में जयपुर में हवामहल के पीछे जलेबीचौक नामक अति व्यस्त इलाके में विधानसभा थी, २०११ में ११वीं विधानसभा के समय में इसे नए भवन में स्थानांतरित कर दिया गया था। कहा जाता है कि तबसे ऐसा एक भी अवसर नहीं आया जब सदन में एक साथ २०० विधायक बैठे हों। कभी ऐसा, किसी विधायक की मौत के कारण हुआ तो कभी किसी के जेल जाने के कारण। ये कोई ऐसी असाधारण घटना नहीं है कि अंधविश्वासों को आमंत्रित किया जाय। परन्तु अत्यन्त दुःख और खेद की बात है कि न सिर्फ ऐसा हुआ वरन् किसी तांत्रिक को बुलाकर भी राय ली गयी।

मुख्य सचेतक कालूलाल गुर्जर ने कहा, 'जहाँ विधानसभा है, वहाँ श्मशान था। मृत बच्चे दफनाए जाते थे। हो सकता है कि कोई आत्मा हो, जिसे शान्ति न मिली हो। वह नुकसान पहुँचा रही हो। इसीलिए सदन में कभी एक साथ २०० विधायक नहीं रहे। सीएम के सामने बात रखी है, हवन कराने को कहा है।'

बीजेपी विधायक हबीबुर्रहमान अशरफी ने कहा, 'भारतीय संस्कृति में ऐसी मान्यता है कि श्मशान भूमि पर भवन नहीं होना चाहिए। ऐसे में विधानसभा के मामले में क्यों नहीं माना जाता सकता। क्या

कारण है कि कभी एक साथ २०० विधायक नहीं बैठे।' जिस जमीन पर विधानसभा का निर्माण हुआ है उस जमीन के एक मालिक प्रेम बियानी का कहना है कि, 'विधानसभा में कोई भूत-प्रेत नहीं है। इसके पिछले हिस्से में श्मशान जरूर है। विधानसभा का मुख्य दरवाजा व मुख्य भवन तो हमारी जमीन पर बना हुआ है। सरकार ने जमीन अवाप्त कर ली, लेकिन आज तक मुआवजा नहीं दिया। अंधविश्वास फैलाने वाले विधायकों को सोचना चाहिए कि जिनकी चार-चार पीढ़ी बिना मुआवजे के धरती से चली गईं उनकी आत्मा की शान्ति के लिए परिजनों को मुआवजा दिलवाएँ।'

माननीयों की जब यह स्थिति है तब आप कैसे ऐसे समाज की कल्पना कर सकते हैं जो अंधविश्वासों से मुक्त हो ?

यह केवल राजस्थान के विधायकों में से अधिक उम्र वालों के ही भ्रम हैं ऐसा नहीं है, युवा विधायक लालू के बेटे बिहार के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री की मानसिकता की बानगी भी देखिये। एक समाचार के अनुसार बिहार के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री तेजप्रताप यादव ने कहा कि पटना में आवंटित सरकारी बंगला वह भूतों के डर से छोड़ रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उप मुख्यमंत्री सुशील मोदी ने उनके पीछे भूत छोड़ दिया है। वस्तुस्थिति तो यह है कि जीव का, स्थूल शरीर, मन व इन्द्रिय आदि साधनों के साथ ईश्वरीय व्यवस्था के अन्तर्गत संयोग जन्म है। तो प्रश्न उठता है कि क्या बिना स्थूल शरीर के भूत-प्रेत योनि हो सकती है। उत्तर है नहीं, क्योंकि बिना शरीर के कोई भी योनि नहीं होती है दूसरे स्थूल शरीर के बिना कोई भी सूक्ष्म शरीर न तो दिखाई देता है और न कोई भौतिक क्रिया ही कर सकता है।

प्रेत योनि के अस्तित्व के समर्थकों का कहना है कि जिनकी दुर्घटना से या अस्वाभाविक मृत्यु होती है वे लोग शेष जीवन में भूत-प्रेत योनि में चले जाते हैं और इधर-उधर भटकते रहते हैं। कभी-कभी ये भूत-प्रेत परकाया में प्रवेश कर जाते हैं और उनको सताते हैं या कष्ट देते हैं। अगर ऐसा है तो वे सामान्यतः अपने परिचितों और स्वजनों को ही अधिक परेशान क्यों करते हैं या कष्ट देते हैं? जो लोग उनके अस्तित्व में विश्वास नहीं करते भूतों को चाहिए कि उनको तंग करके उन्हें अपने अस्तित्व का विश्वास दिलावें। जो लोग पूर्वजन्म में उनके मित्र व सहयोगी रहे उन्हीं को वे क्यों परेशान करते हैं? दिवंगत आत्मा का इधर-उधर भटकना, संभव नहीं क्योंकि वह ईश्वराधीन होने के कारण स्वतंत्रता से कुछ भी नहीं कर सकता। परकाया में प्रवेश करना भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है, क्योंकि एक शरीर में एक ही आत्मा रह सकती है। आत्मा प्रलय काल और मोक्षावस्था को छोड़कर बिना शरीर के कभी नहीं रहती है। यह निर्विवाद सत्य है कि मृत्यु के पश्चात् ईश्वरीय व्यवस्थानुसार जीव या तो दूसरे शरीर को धारण कर लेता है या मोक्ष को प्राप्त होता है। इस बीच उसके द्वारा स्वयमेव किसी अन्य के शरीर में प्रविष्ट होने या इधर-उधर घूमकर लोगों के जीवन में अच्छा-बुरा दखल देने का प्रश्न ही नहीं उठता। मोक्ष प्राप्त जीवात्माएँ पवित्र और आनन्दमग्न रहती हैं वे क्यों किसी शरीर के बन्धन में आवेंगी?

मृत्यु के पश्चात् जीव को एक शरीर से निकलकर दूसरे शरीर में जाने में कितना समय मिलता है इसका निर्देश बृहदारण्यक उपनिषद् के अध्याय ४, ब्राह्मण ४, कण्डिका ३ में उपलब्ध होता है। वहाँ कहा है कि 'तृणजलायुका' की भाँति आत्मा अपने पहले शरीर को छोड़ने से पूर्व ईश्वर की न्याययुक्त कर्मफल व्यवस्था में अगले शरीर में स्थिति कर लेने के पश्चात् ही अपने इस शरीर को छोड़ती है। स्थूल शरीर के बिना कार्य करना संभव नहीं अतः ईश्वर की व्यवस्था में यह आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को तुरन्त ग्रहण कर लेती है। महाभारत वनपर्व में कहा है- आयु पूर्ण होने पर आत्मा अपने जर्जर शरीर का परित्याग करके उसी क्षण किसी दूसरे शरीर में प्रकट होती है। एक शरीर को छोड़ने और दूसरे शरीर को ग्रहण करने के मध्य में उसे क्षण भर का समय भी नहीं लगता। अतः वैदिक सिद्धान्त के अनुसार मृत्यु और जन्म के बीच कोई ऐसा समय ही नहीं बचता कि जिसमें जीवात्मा इधर-उधर भटक सके या भूत-प्रेत बन सके। सच्चाई यह है कि जीवात्मा का किसी भी शरीर से संयोग परमात्मा के अधीन है अतः वह स्वतंत्रता से कुछ नहीं कर सकती।

आज तक किसी ने भूत को नहीं देखा यही सत्य है। हमारे बचपन से पड़े संस्कार भयावह परिस्थितियों में भूत की कल्पना कर लेते हैं। यही कारण है कि भूत का नाम सुनते ही अकसर डर लगने लगता है। एक सुनसान हवेली, रात का वक्त, कड़कती हुई

बिजलियाँ, ये सब दृश्य किसी भी हॉरर फिल्म का एक बेहद डरावना अनुभव होता है। कई लोग भूत देखने का दावा भी करते हैं। यह मात्र हमारे मन का वहम होता है, जो वास्तविक रूप में तब बहुत ज्यादा घटित होता है, जब हम उस बारे में लगातार गहन विचार करते ही रहते हैं। विज्ञान भी भूतों के अस्तित्व को नहीं मानता है। इसके लिये समय-समय पर कई प्रयोग किये जाते रहे हैं। लार्ज हेड्रोन कोलाइडर के आविष्कार के बाद वैज्ञानिकों का दावा है कि वे इसकी सहायता से भूतों के अस्तित्व को गलत साबित कर सके हैं। दी लार्ज हेड्रोन कोलाइडर (एलएचसी) आज तक का सबसे शक्तिशाली कण त्वरक है। एलएचसी स्विट्जरलैंड में जिनेवा के पास यूरोपीय कण भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला सीईआरएन पर आधारित है। सीईआरएन (CERN) विश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला है और मौलिक विज्ञान की खोज के लिए समर्पित है। ब्रायन काक्स बताते हैं कि मानक कणीय भौतिकी के मॉडल के आधार पर किसी भी वस्तु के अस्तित्व का पता लगाया जा सकता है। उनका कहना है कि अगर भूत जैसी कोई चीज वातावरण में होती तो यह कोलाइडर उसे आसानी से डिटेक्ट कर लेती। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि एलएचसी के द्वारा किसी भी ऊर्जा का पता लगाया जा सकता है। आज शिक्षा के किसी भी स्तर को प्राप्त कर लिया जाय पर जब तक बचपन में ही भूत प्रेतों के होने के संस्कारों को निर्मूल नहीं किया जावेगा तब तक इस अवैज्ञानिक धारणा से मुक्ति नहीं मिल सकती। अतः इस कर्त्तव्य को वहन करने हेतु प्रत्येक को सन्नद्ध होना चाहिए ।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

राम का राज्याभिषेक चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नहीं

मान्यवर,

सत्यार्थ सौरभ मार्च २०१८ अंक में 'कब कैसा नववर्ष हमारा' लेख में विनोद बंसल जी ने 'राम का नववर्ष प्रतिपदा को राज्याभिषेक' बताया है जो सही नहीं है। बाल्मीकि रामायण में लिखा है-

नवपञ्च च वर्षाणि दण्डकारण्यमाश्रितः।
चीराजिनजटाधारी रामो भवतु तापसः।। - अयोध्या काण्ड, सर्ग १०, श्लोक १२

'नववर्ष पञ्चमी को कैकेयी ने राम को वनवास, भरत को राज्याभिषेक माँगे।

पुनः भरत प्रतिज्ञा में कहा है-

चतुर्दशे हि सम्पूर्णे वर्षेऽहनि रघूत्तम।
न द्रक्ष्यामि यदि त्वां तु प्रवेक्ष्यामि हुताशनम्।। - अयोध्या काण्ड, सर्ग ७६, श्लोक २०

'चौदहवाँ वर्ष पूर्ण हो जाने पर पहले दिन ही मैंने अयोध्या में आपके दर्शन नहीं किए तो में आग में कूद कर भस्म हो जाऊँगा। फिर भारद्वाज आश्रम में-

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पञ्चम्यां लक्ष्मणाग्रजः।
भरद्वाजाश्रमं प्राप्य ववन्दे नियतो मुनिम्।। - सुन्दर काण्ड, सर्ग ७०, श्लोक १

वनवास के चौदह वर्ष पूरे हो जाने पर चैत्रशुक्ल पञ्चमी के दिन श्री राम, लक्ष्मण भारद्वाज आश्रम में पहुँचे और उन्हें यथाविधि प्रणाम किया।

अतः श्री राम का राज्याभिषेक चैत्रशुक्ल प्रतिपदा में नहीं हुआ यह स्पष्ट है।

बंसल जी की ऐसी असत्य धारणाओं का आश्रय नहीं लेना चाहिए अन्यथा रामायण को लोग उपन्यास ही प्रमाणित करेंगे। दूसरे 'हिन्दू वर्ष संवत्' कोई नहीं, क्योंकि राजा विक्रमादित्य के समय इस राष्ट्र में हिन्दू शब्द भी नहीं था। गुलामी के प्रतीक हिन्दू सम्वत् कह कर आर्य राजा विक्रमादित्य को अपमानित न किया जाये क्योंकि वह आर्य राजा था।

आपका शुभेच्छु विदुषांनुचर
पंडित राजवीर आर्य, मुरादनगर, जिला-गाजियाबाद
चलभाष-९९२७२०३०१५

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री माननीय डॉ. सत्यपालसिंह जी के प्रयासों से Institute of Science, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में Recent Development in Cosmology विषय पर International Conference का आयोजन निश्चित हुआ था इस विषय में प्रथम विज्ञापन दिनांक (२३/०२/२०१८) में वैदिक-विज्ञान के प्रवक्ता आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक को Patron-Board का सदस्य दर्शाया गया था। साथ ही कॉन्फ्रेंस के अन्त में होने वाले पैनल डिस्कशन की भी चर्चा थी।

इस विज्ञापन में भारत के अतिरिक्त अमेरिका, इटली, जापान व रूस के ६ वैज्ञानिकों के आने की भी सूचना थी। इसके बाद के एक विज्ञापन में काफी कुछ परिवर्तन कर दिए गए। कुछ वैज्ञानिकों के पूर्वाग्रह थे जो वैज्ञानिकों को शोभा नहीं देते।

ऐसा प्रतीत होता है कि एक वैज्ञानिक कान्फ्रेन्स में वैदिक साइन्स की प्रस्तुति रखना आयोजकों को अरुचिकर लगा। वैदिक वैज्ञानिक आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक के स्टेटस को बदलना, उनके उद्‌बोधन में अनुचित टोकाटोकी करना, नियत समापन समय से पूर्व ही समापन की घोषणा कर देना, आयोजक के कार्यक्रम के मध्य में से उठकर चले जाना, इस सन्देह की पुष्टि करते हैं। आर्य जगत् के सुख्यात विद्वान् आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक को इस कान्फ्रेन्स के वैदिक सत्र में अढाई घण्टे का विशेष व्याख्यान देना था।

जब वैदिक सत्र प्रारम्भ हुआ, तब सभा की अध्यक्षता कर रहे प्रो. मलिक (H.O.D.) ने अनावश्यक अकारण वक्तव्य दिया कि 'हम झगड़ा नहीं चाहते हैं, हमने स्वामीजी को आमन्त्रित किया है, यहाँ बड़े-बड़े वैज्ञानिक उपस्थित हैं, हम बिना Maths व Experiment के कुछ नहीं मानेंगे, हम इससे भिन्न वक्तव्य को नहीं सुनेंगे, बीच में रुकवा सकते हैं, हम बीच में छोड़कर जा सकते हैं......आदि।'

वक्ता को आमन्त्रित करने से पूर्व इस प्रकार की पूर्वाग्रह व पक्षपात भरी बातें करना निश्चित ही अशिष्टता की श्रेणी में आता है। आचार्य जी ने फिर भी अपने उद्‌बोधन में अपने विषय को सुस्पष्ट किया। भाषा अंग्रेजी ही रखी गयी। जो बोला उसे स्क्रीन पर भी दर्शाया। प्रो. मलिक के इरादे कुछ और ही थे। एक से ढ़ेढ घंटे पश्चात् प्रो. मलिक ने बीच में बोलना प्रारम्भ कर दिया, जबकि निश्चित यह हुआ था कि दो से सवा दो घंटे के लम्बे वक्तव्य के पूर्ण होने के उपरान्त ही प्रश्न किये जायेंगे। उन्होंने यह कहकर कि कई प्रश्न हमें पूछने हैं, आचार्य जी को रुकने का आग्रह किया, तब उन्होंने कोई प्रश्न नहीं पूछा बल्कि यही कहा, 'आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धान्त के विरुद्ध हम कुछ नहीं सुनेंगे, कोई कुछ नहीं सुनेगा। यह सत्र ऐसे नहीं चलेगा।' इस पर आचार्य जी ने विनम्र निवेदन किया और कहा 'कभी ऐसा दुराग्रह गैलेलियो के साथ पोप ने किया था। आप वैज्ञानिक जगत् के पोप न बनें। आज आप मेरी बात नहीं मानेंगे परन्तु स्मरण रखें कि आपकी पीढ़ी को मेरे वैदिक विज्ञान की ओर आना पड़ेगा।' परन्तु वे कुछ भी सुनने के लिए तैयार नहीं और उत्तेजित होते हुए सभा छोड़कर ही चले गये। स्वागत योग्य यह था कि शोध छात्रों ने हाथ उठाकर आचार्य जी को अपना वक्तव्य जारी रखने का आग्रह किया, अन्य वैज्ञानिक शान्त रहे। प्रो. जयन्त नार्लिकर जी ने स्वीकारा कि विज्ञान के पास आचार्य जी द्वारा पूछे गये सभी प्रश्नों के उत्तर नहीं हैं। जबकि सायं पाँच बजने पर पैनल डिस्कसन का होना निर्धारित था। वह नहीं किया गया सायं पाँच बजे बाद उपस्थित कुछ वैज्ञानिक और शोधछात्रों के प्रश्नों के उत्तर दिये जाते रहे। छात्र बहुत उत्सुक थे, यह बड़ा सकारात्मक पक्ष था।

एक शोध छात्र ने तो यहाँ तक कह दिया कि 'स्वामी जी! आप सब्जी मंडी में हीरा बेचने आये है...लोग उतना ही समझते हैं जितनी उनकी औकात होती है...।' आचार्य जी वैदिक विज्ञान के उस स्वरूप, जो विगत लगभग ४-५ हजार वर्षों से लुप्त है, को खोजकर अपने देश को देना चाह रहे हैं, जो संसार में अन्यत्र किसी वैज्ञानिक वा वेदज्ञ के पास नहीं है। इस अनुसंधान से न केवल भौतिकी जगत् में क्रान्ति की संभावना है, अपितु भारत व विश्व के सामाजिक व राजनैतिक परिदृश्य पर भी इसका दूरगामी प्रभाव होगा।

आचार्य जी का मानना है कि वेद व ऋषियों के ज्ञान-विज्ञान के अतिरिक्त भारतीयों के मस्तिष्क, मन व आत्मा को संस्कार व सन्मार्ग देने वाला कोई अन्य साधन नहीं है। उधर वेद के नाम पर भी प्रायः आडम्बर रह गया है, ऐसे में वेदादि शास्त्रों के प्रति अविश्वास गहराता जा रहा है। यही कारण है कि शुद्ध वैदिक विज्ञान पर भी अविश्वास के बादल छा रहे हैं। ऐसे में आचार्य जी को शोध को दुनिया के वैज्ञानिकों तक पहुँचाने हेतु विशेष प्रयास करने होंगे। इससे महर्षि दयानन्द के दृष्टिकोण की पुष्टि होगी तथा आर्यसमाज का नाम गर्व से लिया जावेगा। इस कान्फ्रेन्स में आर्य जगत् के शिरोमणि वैदिक विद्वान् श्री आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश, युवा विद्वान् आचार्य सनत्कुमार जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीमान् सुरेशचन्द्र जी आर्य, बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीमान् दीनदयाल जी गुप्ता, पूर्व कुलपति व पूर्व आई.जी. पुलिस श्रीमान् डॉ. टी. सी. डामोर, भौतिकी के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. वेद प्रकाश जी आर्य के साथ दूर-दूर से आए लगभग ८०-९० आर्यजन उपस्थित थे।

'महर्षि देव दयानन्द एक सच्चे गुरु थे'

सच्चा गुरु वही होता है जो अपने शिष्यों को अच्छी शिक्षा देकर अज्ञान से ज्ञान की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, कुपथ से सुपथ की ओर ले जाता है। अन्धविश्वास, पाखण्ड व मूर्त्ति से हटाकर, ईश्वर की सच्ची उपासना जो सन्ध्या, हवन, सत्संग व अष्टांग योग है, उनकी ओर ले जाता है। इन कार्यों में देव दयानन्द ने अपनी एक विशेष अच्छी व अलग ही पहचान बना रखी है। यह सद्गुरु शृंखला आदि सृष्टि से चली आ रही है और सृष्टि के अन्त तक चलती रहेगी कारण मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है, उसको सही रास्ता दिखाने के लिये अपने से अच्छे एक सच्चे गुरु की आवश्यकता पहले भी सदा रही है और आगे भी रहेगी।

जैसा कि मैंने लिखा कि सद्गुरु की शृंखला सृष्टि की आदि से चली आ रही है। देवों के देव, पिताओं के पिता और गुरुओं के गुरु ईश्वर ने सृष्टि की आदि में, सृष्टि की पूरी रचना करने के बाद मनुष्यों की उत्पत्ति अनेक नौजवान स्त्री-पुरुषों के रूप में की जिससे आगे सृष्टि चलती रहे। तभी ईश्वर ने मनुष्यों को सही मार्ग दिखाने के लिये यानि धर्म, अर्थ, काम को धर्मानुसार करते हुए मोक्ष जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है उसे प्राप्त करने के लिए सब से अधिक पवित्र आत्मा वाले चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा थे, उनके श्री मुख से चार वेदों को जिनके

नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं उनको उच्चारित करवाया। वह वेद-ज्ञान उपस्थित सभी पुरुषों व स्त्रियों ने सुना, परन्तु उनमें भी ब्रह्मा जो सर्वश्रेष्ठ ऋषि थे, जिनकी स्मरण शक्ति बहुत तेज थी, इन्होंने इन चारों वेदों को कंठस्थ कर लिया और उपस्थित लोगों को सुनाते रहे। फिर यह कर्म अर्थात् पिता का पुत्र को, गुरु का शिष्य को सुनाना लाखों वर्षों तक चलता रहा। जब स्याही, कलम, दवात, कागज का आविष्कार हो गया तब इन चारों वेदों को पुस्तकबद्ध कर दिया जो अभी तक चलते आ रहे हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि सृष्टि के आदि से मनुष्य-मात्र के कल्याण के लिये वेदों का ज्ञान देने वाला ईश्वर सर्वप्रथम सद्गुरु हुआ। फिर ब्रह्मा उन वेदों को कण्ठस्थ करके आम जनता को सुनाते रहे इसलिए दूसरे सद्गुरु ब्रह्मा हुए। तत्पश्चात् त्रेता में रामायण काल में हमें दो सद्गुरु दिखाई देते हैं जिनके नाम हैं वशिष्ठ व विश्वामित्र जिन्होंने रावण, कुम्भकरण जैसे बलशाली व अन्यायी राक्षसों का संहार करने के लिए एक योजनावद्ध तरीके से श्रीराम और लक्ष्मण को राजा दशरथ से लेकर उन्हें धनुर्विद्या तथा अन्य विद्यायें सिखाईं जिससे वे रावण को उसके पूरे परिवार सहित मारने में सफल हुए। ऐसा करके उन्होंने आम जनता को सुखी बनाया और ऋषि-मुनियों के यज्ञों को अपवित्र होने से बचाया। इसलिये ये भी सद्गुरु की श्रेणी में आते हैं। फिर हम जब आगे बढ़ते हैं तो द्वापर में महाभारत के समय दो गुरु दिखाई देते हैं। गुरु द्रौण और गुरु कृपाचार्य, पर इनको हम सद्गुरु की श्रेणी में नहीं गिनते कारण इन्होंने अपने स्वार्थ के लिए अपने कर्त्तव्य को त्याग कर पापी दुर्योधन का साथ देकर अधर्म का काम किया। तत्पश्चात् भारत के इतिहास का जब हम सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करते हैं तो चन्द्रगुप्त मौर्य के सद्गुरु चाणक्य का नाम आता है जिन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य जैसे योग्य बच्चे को सुशिक्षित व शस्त्रविद्या में

निपुण करके एक अच्छा योद्धा बनाकर पापी राजा महानन्द का वध करवाकर चन्द्रगुप्त को राजा बनाया और जनता को सुखी बनाया। इसके बाद हम आगे बढ़ते हैं तो शेर शिवाजी के सद्‌गुरु रामदास पर हमारी दृष्टि पड़ती है जिन्होंने शेर शिवाजी को युद्ध विद्या में निपुण करके औरंगजेब जैसे पापी बादशाह के राज्य को नष्ट करवाया। फिर हम आगे चलते हैं तो हमारी दृष्टि उस महान् सद्‌गुरु चक्षुविहीन स्वामी विरजानन्द पर पड़ती है जिसने अपने योग्य शिष्य बाल ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द को तीन वर्ष अपनी गोद में रखकर उनको वेदों की कुंजी प्रदान की जिससे महर्षि दयानन्द ने, जो उस समय आचार्य सायण व उव्वट द्वारा वेदों के जो गलत और अश्लील भाष्य किये थे उनको गलत साबित करके, वेदों के सही भाष्य करके विश्व में वेदों का प्रकाश किया। महर्षि दयानन्द ने न केवल वेदों का सही भाष्य ही किया बल्कि

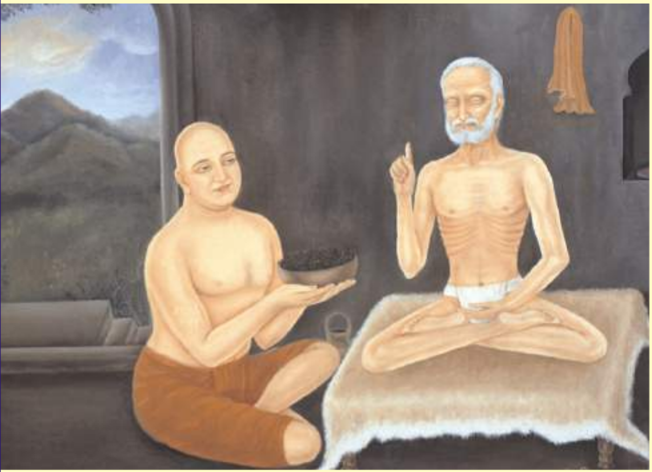

अपने सद्‌गुरु विरजानन्द को गुरुदक्षिणा के रूप में वचन दिये थे पूरी उम्र उन वचनों का पालन करते हुए विश्व में जो अज्ञान के कारण अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला था उसको रोकने की किसी में हिम्मत नहीं थी, उस समय देव दयानन्द ने अपनी जान को जोखिम में डाल कर वेदों के सही अर्थ बतलाकर उस अन्धविश्वास व पाखण्ड को मिटाया, और दुःखियों, असहायों व निर्बलों का सहारा बने। गाय की चीत्कार को सुना और विधवाओं के आँसू पोंछे तथा आजादी का शंखनाद फूँका। इस प्रकार देश में नवजागृति का संचार किया।

महर्षि दयानन्द नव जागरण के पुरोधा कहलाए जाते हैं। जब देव दयानन्द अपने सद्‌गुरु विरजानन्द की कुटिया छोड़कर अपने कार्य क्षेत्र में उतरे, उस समय देश की स्थिति बड़ी ही नाजुक व भयावह थी। महाभारत के भीषण युद्ध में सभी

विद्वान्, योद्धा, आचार्य, पुरोहित आदि के मारे जाने से वेद ज्ञान प्रायः लुप्त हो गया था जिससे देश में अज्ञान व अविद्या के फैलने से अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला हो गया था। जाति कर्म से न मानकर जन्म से मानी जाने लगी थी। स्वार्थी पण्डितों ने अपना पेट भरने के लिये अनेक मत-मतान्तर चला दिए थे, जिससे कम पढ़े-लिखे व अविद्वान् भी विद्वान् समझे जाने लगे थे। ईश्वर की सच्ची उपासना जो सन्ध्या, हवन, सत्संग व अष्टांग योग है, इनको छोड़कर उन स्वार्थी अधकचरे पण्डितों ने राम और कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानकर उनकी तथा अन्य बनावटी व निरर्थक देवी देवताओं की मूर्ति बनाकर उनकी ही पूजा करवाने लगे। और उसी को ही मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताया जाने लगा था। कृष्ण का अश्लील व भद्दा चरित्र का वर्णन करके देश में अश्लीलता का ताण्डव नृत्य हो रहा था। ऐसी स्थिति में देव दयानन्द ने एक सद्‌गुरु और अच्छे वैद्य के रूप में वेदों का पुनः प्रकाश करके देश को नई दिशा प्रदान की जिससे देश में नवजागृति आई और देश वेदों के प्रकाश से प्रकाशित होकर पुनः उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर हुआ। इसलिए देव दयानन्द जिन्होंने देश को सही मार्ग पर चलना सिखाया और अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने के लिए वेदों की ओर लौटो का आह्वान किया जिससे देश में नव चेतना आई, इसलिए देव दयानन्द को हम सच्चा गुरु कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इसीलिए महर्षि अरविन्द ने कहा था कि-

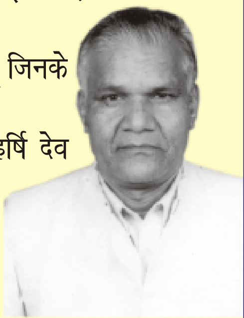

मैं हिमालय की अनेक चोटियाँ देख रहा हूँ जिनके ऊपर देश के महापुरुष बैठे हुए हैं।
जो चोटी सबसे ऊँची है, उसके ऊपर महर्षि देव दयानन्द दिखाई दे रहे है।।

किसी कवि ने ठीक ही कहा है-
सौ बार जन्म लेंगे, सौ बार फना होंगे,
एहसान! दयानन्द के, फिर भी न अदा होंगे।

-खुशहाल चन्द्र आर्य
महात्मा गाँधी रोड़ (दो तल्ला), कोलकत्ता

पर्यावरण दिवस पर विशेष

कागा सब तन खाइयो

एक रिपोर्ट में कहा गया है कि विगत कुछ समय से उत्तर भारत में विशाल क्षेत्र से गिद्ध और चील जैसे पक्षियों के, जो भारी संख्या में स्थान-स्थान पर दिखाई दिया करते थे, लुप्त हो रहे हैं। चीलों और गिद्धों को हम प्रायः आकाश की ऊँचाइयों में उड़ते देखते रहे हैं। जंगलों और मैदानों में मुर्दा जानवरों का मांस खाते हुए और बड़े-बड़े समूहों में भी बैठे देखते रहे हैं, किन्तु अब कुछ समय से यह पक्षी बहुत कम देखने में आ रहे हैं। ये गिद्ध और चीलें कहाँ चली गईं?

ये पक्षी किस कारण लुप्त हो गए- अभी हम इसका पता लगा भी नहीं पाये थे कि सुबह से शाम तक हमारे घर में शोर मचाते हुए कौए भी गायब होने लगे। उत्तरी भारत में बहुतायत से पाया जाने वाला यह पक्षी अब बहुत ही कम संख्या में दिखाई दे रहा है। कुछ समय पहले तक सूर्य उदय होने पर जब हमारी आँख खुलती तो सबसे पहले हमारे कानों में कौए की आवाज ही पड़ती या कौए की आवाज के साथ ही हम नींद से जागते। कागा हमारी मुंडेर पर बैठा होता और काएं काएं का शोर मचाता। कई बार हम रोटी के एक टुकड़े अथवा किसी अन्य खाद्य सामग्री के लिए कई कौओं को आपस में लड़ते और छीना झपटी करते हुए देखते। अब कुछ समय से यह सब देखने में नहीं आ रहा है। कौए हमारा साथ छोड़ते जा रहे हैं जैसे कुछ समय पहले चील और गिद्ध गायब हो गए थे।

मैं इस रिपोर्ट के पहले भाग पर ही पहुँचा कि मानव अस्तित्व की ओर तेजी से बढ़ रहे बड़े खतरे की गंभीर चिन्ता ने मुझे घेर लिया। नजर उठाकर देखता हूँ तो मेरे आँगन और घर की दीवार पर आज कोई कागा नहीं है। सामने मैदान में जो नीम का वृक्ष खड़ा है, उस पर भी कोई कागा नहीं है, पक्षियों में मानव के इस पुराने साथी को आज कहीं न पाकर मुझमें अधूरेपन का एक विचित्र सा एहसास जाग गया है। किन्तु मेरी चिन्ता का कारण यह नहीं है कि आज मैं अपने आसपास उस पक्षी को नहीं पा रहा हूँ जो हमारी भारतीय संस्कृति एवं साहित्य का विषय रहा है। इस पक्षी को लेकर कवियों ने कितने ही गीत, कितने ही दोहे, कितनी ही कविताएँ लिखी हैं।

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो मांस।
दो नैना मत खाइयो, इन्हें पिया मिलन की आस।

मेरी चिन्ता का कारण यह भी नहीं है कि कागा हजारों वर्षों तक हमारे विश्वास और मान्यताओं के आधार पर संदेशवाहक रहा है। हम मानते रहे हैं कि जब मुंडेर पर कागा बोलता है तो वह घर में अतिथि आने की पूर्व सूचना होती है। मेरी चिन्ता का कारण यह नहीं है कि कागा नहीं रहेगा तो अब कोई पक्षी किसी अतिथि के आने की सूचना लेकर भी नहीं आयेगा। मैं एक मनुष्य के नाते कम से कम इतना विकास तो कर ही चुका हूँ कि पलक झपकते ही समस्त आवश्यक सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकूँ। मुझे अब सूचना पाने या देने के लिए अब किसी कबूतर या कौए की आवश्यकता नहीं रही है। तब कौओं के गायब होते जाने की बात से मुझे चिन्ता क्यों? रिपोर्ट कहती है - 'पर्यावरण सन्तुलन को ध्यान में रखते हुए अगर हम सोचें तो पक्षियों का मानव जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। आकाश में उड़ते हुए यह पक्षी वातावरण की सफाई का बहुत बड़ा

प्राकृतिक साधन हैं। गिद्ध, चीलें, कौए और इनके अतिरिक्त कई पशु-पक्षी भी, हमारे लिए प्रकृति की ऐसी देन हैं, जो उन समस्त कीटों, जीवों तथा प्रदूषण फैलाने वाली वस्तुओं का सफाया करते रहते हैं, जो धरती पर मानव-जीवन के लिए खतरा उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसे पशु-पक्षियों का न रहना या लुप्त हो जाना मनुष्य के लिए सबसे बड़ी हानि है।

गिद्ध, चीलें, बाज और कौए तथा अन्य अनेक प्रजातियों के ये पक्षी प्रकृति का सन्तुलन बनाए रखने के लिए अपना असाधारण योगदान बनाए रखते हैं। इन पक्षियों का मानव-जीवन के लिए जो महत्व है, उसका अनुमान हम अभी ठीक-ठीक नहीं लगा पा रहे हैं, किन्तु यदि स्थिति यही बनी रही तो आगे चलकर हम महसूस करेंगे कि पशु-पक्षियों के छिन जाने से हम कितने बड़े घाटे में आ गए हैं।

कौन नहीं जानता कि चीलें और गिद्ध मृत पशु-पक्षियों को अपना आहार बनाकर वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने का कर्तव्य पूरा करते हैं। गिद्ध और चीलें ही नहीं, कौए भी पक्षियों की उसी श्रेणी में आते हैं, जिन्हें प्रकृति ने मनुष्य के लिए स्वच्छकार बनाकर भेजा है। ये पक्षी कूड़े-करकट के ढेरों में पड़ी गलने-सड़ने वाली वस्तुओं को खाकर समाप्त करते रहते हैं।

हमारी चिन्ता का विषय यह है कि जब इन पक्षियों का कोई शिकार नहीं कर रहा है, कोई इन्हें मार नहीं रहा है, सता नहीं रहा है, तब क्या कारण है कि ये हमारी बस्तियों और शहरों से विदा होते जा रहे हैं, लुप्त या समाप्त होते जा रहे हैं?

पक्षियों की संख्या में जिस तेजी के साथ कमी आ रही है, उसका कारण हमें जानना चाहिए। आदमी ने जिस ढंग से कीटनाशक विषैली औषधियों का प्रयोग किया है, वह इन

पक्षियों के लुप्त हो जाने का सबसे बड़ा कारण है। वैज्ञानिक मानते हैं कि पशु-पक्षी अपनी प्राकृतिक बुद्धि के माध्यम से कीटनाशक दवाओं के प्रभाव को भली प्रकार भाँप लेते हैं और उन स्थानों से पलायन कर जाते हैं जहाँ इनका अन्धाधुन्ध प्रयोग होता है, किन्तु जब वे किसी अन्य स्थान पर जाकर भी वैसा ही प्रदूषण पाते हैं तो इस विष के कारण उनकी प्रजातियाँ धीरे-धीरे लुप्त होने लगती हैं।

विशेषज्ञों का कहना था कि ऐसे समस्त पशु-पक्षी जो मृत पशु-पक्षियों का मांस खाकर अपना पेट भरते हैं, इसलिए दिन प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं कि जिस मांस को वे खाते हैं, वह स्वयं अत्यधिक विषैला हो चुका होता है। यह स्थिति और भी अधिक गंभीर है। क्योंकि हम अपने पालतू पशुओं को जो चारा दे रहे हैं उस पर रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाओं का पहले ही खुला प्रयोग हो चुका होता है।

रासायनिक खाद एवं कीटनाशक औषधियों का विषैला प्रभाव चारे में बना रहता है और उसका हमें अनुमान तक नहीं होता। परिणाम यह होता है कि हमारा पशुधन धीरे-धीरे असर करने वाले विष का सेवन करता रहता है जिससे वह स्वयं तो समय से पहले काल का ग्रास बनता ही है, साथ ही उन पशु-पक्षियों को भी ले बैठता है, जो उनके मांस का सेवन करते हैं और प्रतिरोधक शक्ति अन्य जीवों की अपेक्षा कम होने के कारण शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। यही कारण है कि अब विकसित देशों में बहुत सी कीटनाशक औषधियों तथा कुछ विशेष रासायनिक खादों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

वैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि पर्यावरण में विष के निरन्तर बढ़ते रहने से पक्षियों की प्रजनन-क्षमता का ह्रास हुआ है। प्रजनन क्षमता कम हो जाने के कारण भी पक्षियों की बहुत सी प्रजातियाँ लुप्त होती जा रही हैं। वास्तविकता यह है कि आज वातावरण में जिस ओर भी देखें विष ही विष घुला पड़ा है। गाँवों, बस्तियों और नगरों, महानगरों से लेकर जंगलों और पर्वतों तक में विस्फोटक पदार्थों का जिस बेतहाशा ढंग से खुला प्रयोग हो रहा है, उसे विस्तार में जाकर समझने की आवश्यकता नहीं है। डीजल और पेट्रोल जैसे ईंधन की बढ़ती हुई खपत और उसके फलस्वरूप फैलते, वातावरण में घुलते हुए धुएँ ने धरती पर जीवन को कितना दुष्कर बना दिया है, यह कोई ढकी छुपी बात नहीं है। ऐसी प्रदूषित हवा, ऐसे प्रदूषित जल, ऐसे प्रदूषित आहार का सेवन करने वाले पशु-पक्षी, जो मानव जाति से अधिक संवेदनशील हैं, यदि इस विष को सहन न करते हुए लुप्त होते जा रहे हैं तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं है।

इन मांस-भक्षी पक्षियों के लुप्त हो जाने के उपरान्त जब कोई ऐसा प्राकृतिक साधन हमारे पास नहीं रहेगा, जिससे हम अपने मृत पशुओं को गलने-सड़ने से बचाकर ठिकाने लगा सकें तो उस समय क्या होगा। गिद्ध, चीलें और कौऐ आदि

मांसभक्षी पंछी तो हमारी धरती से विदा हो चुके होंगे, इनके दुर्गन्ध फैलाने वाले हाड़-मांस के प्रदूषण से हमें बचाने वाला तो कोई होगा नहीं, तब स्पष्ट है कि स्वच्छ हवा में यह प्रदूषण फैलेगा।

ध्यान देने की बात यह है कि वातावरण में जो विष फैला है, जो प्रदूषण व्याप्त है, उसका उत्तरदायित्व भी हम मनुष्यों पर ही है। विकास की अंधी दौड़ में हम यह भूल गए कि मूर्ख आदमी जिस शाखा पर बैठा है, उसी को काटता भी जा रहा है। उदाहरण के लिए पेट्रोलियम पदार्थों का प्रयोग आरम्भ करते हुए कब किसने यह सोचा था कि इसके कसैले धुंए से वातावरण प्रदूषित होगा अथवा भाँति-भाँति के रासायनिक खादों तथा कीटनाशक औषधियों से अपनी उपज को बढ़ाने एवं सुरक्षित रखने की लालसा में कब किसे यह ख्याल आया होगा कि इसका विषैला प्रभाव हम पर नहीं उन पशु-पक्षियों के जीवन पर भी पड़ेगा जो धरती पर मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं।

गिद्ध और चीलें लुप्त प्रायः हो चुके हैं। कौए गायब हो रहे हैं यह बात साधारण नहीं है। यह इस खतरे का द्योतक है कि यदि यह सिलसिला चलता रहा तो धरती आदमी के अनुकूल नहीं रहेगी। पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ेगा तो धरती पर मनुष्य का जीवन खतरे में पड़ जायेगा।

सारांश यह है कि पशु-पक्षियों के लिए ही नहीं स्वयं अपने लिए भी हमने इस धरती को रहने योग्य नहीं छोड़ा है। चील, गिद्ध और कौए जो धरती के प्रदूषित माहौल से बचकर आकाश के स्वच्छ माहौल में सांस लेने को उड़ान भर लिया करते थे, अब वह भी उनके लिए अनुकूल नहीं रहा है। आकाश को भी मनुष्य ने कचरे और प्रदूषण से बुरी तरह भर दिया है, अगर हम नहीं चेते तो नतीजे आने वाली पीढ़ियों को भी भुगतने पड़ेंगे।

- गिरिराजशरण अग्रवाल
१६ साहित्य विहार,
बिजनौर (उ. प्र.)
साभार- गर्भनाल

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य — मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग — कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया — उपमंत्री-न्यास

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

यह मेरी उदयपुर की दूसरी यात्रा है। कारण स्पष्ट हो गया। कोई दैवीय शक्ति मुझे यहाँ खींचकर लायी है। बाल्यकाल से ही गुरुदेव दयानन्द सरस्वती की तपस्थली देखने की उत्कट अभिलाषा थी। आज हृदय गद्गद् हो गया। मेरे पास बताने के लिए शब्द नहीं हैं। महसूस कर रहा हूँ जैसे इस क्षण गुरुदेव का प्रसाद मिल रहा है। महसूस कर रहा हूँ उनकी कृपादृष्टि मेरे ऊपर हो रही है। मैं आज यहाँ आकर धन्य हो गया।

- योगाचार्य सुदर्शन द्विवेदी, खजुराहो

नवलखा महल से सम्बन्धित सभी आर्यजनों को सादर नमस्ते व साधुवाद। आप सभी के द्वारा किए जा रहे पुनीत श्रम के लिए जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है। आप लोगों ने इतनी सुन्दर आर्यावर्त्त गैलेरी बनाकर आमजन पर बहुत उपकार किया है। ईश्वर सभी आर्यजनों को और सात्विक ऊर्जा प्रदान करे, मेरी यही कामना है।

- आर्य कमल धवन परिवार, नई दिल्ली

जीवन रूपी गाड़ी को ठीक से आगे बढ़ाने के लिए

अनिवार्य है अहंकार का त्याग, विनम्रता व सहजता

सेना की बड़े-बड़े पहियोंवाली विशालकाय गाड़ियों का काफिला एक अनजान अपरिचित जंगली मार्ग से गुजर रहा था। तभी सड़क पर सामने एक बड़ा सा गेट नजर आया। पास जाने पर पता चला कि गेट की चौड़ाई तो काफी थी लेकिन उसकी ऊँचाई सेना की गाड़ियों की ऊँचाई से एक इंच कम थी। गेट सिर्फ एक इंच छोटा होने के कारण गाड़ियों का गेट पार करके आगे जाना असम्भव था। सभी बड़े परेशान नजर आ रहे थे। करें भी तो क्या करें? तभी सेना की बड़े-बड़े पहियोंवाली विशालकाय गाड़ियों का काफिला खड़ा देखकर पास के गाँव के बहुत से लोग भी वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने काफिले के रुकने का कारण पूछा तो पता चला कि गेट की ऊँचाई एक इंच अधिक होने के कारण गाड़ियाँ पार नहीं जा पा रही हैं। तभी एक ग्रामीण ने गाड़ियों के बड़े-बड़े पहिए ध्यानपूर्वक देखते हुए कहा कि गाड़ियों के पहियों की थोड़ी-थोड़ी हवा निकालकर देखो। शायद गाड़ियों की ऊँचाई कम हो जाए और गाड़ियाँ गेट से पार हो जाएँ। ऐसा ही किया गया। थोड़ी-थोड़ी हवा कम करने पर ही गाड़ियों की ऊँचाई डेढ़-डेढ़ दो-दो इंच तक कम हो गई और इससे सभी गाड़ियाँ आसानी से गेट के पार हो गईं। हमारी जीवन रूपी गाड़ी के साथ भी प्रायः ऐसा ही होता है। उसमें अहंकार रूपी हवा अधिक होने के कारण ही वह ठीक से आगे नहीं बढ़ पाती और कहीं भी अटक कर खड़ी हो जाती है। इस अहंकार रूपी हवा के अधिक होने के कारण ही वह व्यक्तित्व विकास अथवा भौतिक प्रगति के मार्ग में उत्पन्न अवरोध रूपी दरवाजों को पार करने में असमर्थ रह जाती है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में उन्नति के लिए इस अहंकार रूपी वायु को संतुलित व नियंत्रण में रखना अनिवार्य है। हवा का कम दबाव हो या ज्यादा दबाव हो दोनों ही घातक होते हैं। बिना पर्याप्त हवा के किसी भी वाहन के पहिए आगे नहीं बढ़ सकते लेकिन अधिक हवा होने पर उनके फटने अथवा बर्स्ट होने का खतरा भी बना रहता है। इसी प्रकार से हममें स्वाभिमान अथवा आत्मसम्मान तो अनिवार्य है लेकिन अहंकार नहीं। स्वाभिमान अथवा आत्मसम्मान का विकृत स्वरूप ही अहंकार है जो पूर्णतः त्याज्य है। यह अहंकार रूपी वायु ही है जिसके कारण हमारे थोबड़े सूजे रहते हैं जिनके कारण मुस्कराहट हमसे कोसों दूर हो जाती है। जब तक अहंकार के कारण हमारे थोबड़े सूजे रहेंगे अथवा दिमाग चढ़े रहेंगे हम न तो हँसी-खुशी से रहते हुए उन्मुक्त जीवन जी पाएँगे और न दूसरों को गले ही लगा सकेंगे। एक बार इस अहंकार रूपी वायु को कम करके तो देखिए कितना आनन्द आएगा। मुखमंडल कितना कोमल व आकर्षक दिखने लगेगा। उसका सम्मोहन बढ़ जाएगा। जो लोग हमारी परछाइयों से भी दूर भागते थे पास आने और मित्रता करने को बेताब नजर आएँगे। जीवन में लगाए जाने वाले उन्मुक्त ठहाके न जाने कितने भयंकर रोगों को दूर करने में सक्षम हैं लेकिन यह तभी संभव है जब अहंकार रूपी वायु नियंत्रण में रहे। ये

"हममें स्वाभिमान अथवा आत्मसम्मान तो अनिवार्य है लेकिन अहंकार नहीं। स्वाभिमान अथवा आत्मसम्मान का विकृत स्वरूप ही अहंकार है जो पूर्णतः त्याज्य है।"

अहंकार रूपी वायु ही है जो दो इंसानों को मिलने से रोके रखती है। इसी के कारण हम आलिंगनबद्ध होना तो दूर ठीक से हाथ मिलाने में भी संकोच करते हैं। तभी तो हम ऐसे हाथ मिलाते हैं जैसे दो अस्थि पंजरों की हथेलियाँ व अंगुलियाँ आपस में टकरा रही हों।

अहंकार रूपी घर्षण के कारण ही हमारे जीवन की गाड़ी सरपट नहीं दौड़ पाती। यदि जीवन रूपी गाड़ी को वास्तव में एक निश्चित गति से व एक निश्चित लय में चलाना है तो जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त अहंकार को तिलाञ्जलि देनी ही होगी। जब तक हमारे अहंकार का स्तर ऊँचा बना रहेगा हम किसी भी दरवाजे में प्रवेश नहीं कर पाएँगे। अपने-पराए सभी दूर दिखलाई ही नहीं देंगे और दूर होते चले जाएँगे। जैसे ही अहंकार के स्तर में कमी आएगी हर दरवाजे में प्रवेश करना व हर इंसान के नजदीक पहुँचना संभव हो पाएगा। हर आदमी को ही अपना बनाना संभव नहीं हो जाएगा अपितु अपने स्वयं के निकट पहुँचना भी संभव हो सकेगा जो बहुत कठिन होता है। ये अहंकार ही है जो हमें अपनों से व खुद अपने से दूर रखता है। अच्छे सम्बन्ध विकसित करने हों अथवा किसी भी प्रकार की उन्नति करनी हो अहंकार से मुक्ति अनिवार्य है। आत्मिक विकास हो या सामाजिक विकास सभी के लिए अहंकार को कम करके थोड़ा झुकने, थोड़ा विनम्र होने व थोड़ा सहज होने की जरूरत है किसी के समक्ष रेंगने अथवा आत्मसम्मान अथवा स्वाभिमान त्यागने की नहीं।

- सीताराम गुप्ता
ए. डी.- १०६-सी
पीतमपुरा, दिल्ली- ११००३४

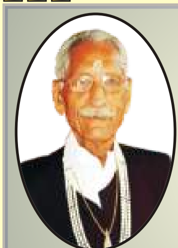

परहित में जुट जाने से,
ही पूरे होते हैं अरमान।
जग देता है स्नेह सदा,
और बढ़ता है सम्मान।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

''सत्यार्थ-भूषण'' पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

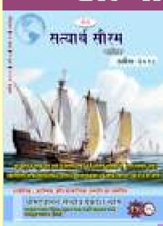

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

इतिहास का ठुकराया हीरा वीर छत्रपति शम्भा जी

वीर शिवाजी के पुत्र वीर शम्भा जी को कुछ इतिहासकार अयोग्य आदि की संज्ञा देकर बदनाम करते हैं। जबकि सत्य ये है कि अगर वीर शम्भा जी कायर होते तो वे औरंगजेब की दासता स्वीकार कर इस्लाम ग्रहण कर लेते। वह न केवल अपने प्राणों की रक्षा कर लेते अपितु अपने राज्य को भी बचा लेते। वीर शम्भा जी का जन्म १४ मई १६५७ को हुआ था। आप वीर शिवाजी के साथ अल्पायु में औरंगजेब की कैद में आगरे के किले में बन्द भी रहे थे। आपने ११ मार्च १६८९ को वीरगति प्राप्त की थी। इस लेख में वीर शम्भाजी जी के उस महान् और प्रेरणादायक जीवन के हमें दर्शन होते हैं जिसका वर्णन इतिहासकार प्रायः नहीं करते।

औरंगजेब के जासूसों ने सूचना दी कि शम्भा जी इस समय अपने पाँच-दस सैनिकों के साथ वारद्वारी से रायगढ़ की ओर जा रहे हैं। बीजापुर और गोलकुण्डा की विजय में औरंगजेब को शेख निजाम के नाम से एक सरदार भी मिला जिसे उसने मुकर्रब की उपाधि से नवाजा था। मुकर्रब अत्यन्त क्रूर और मतान्ध था। शम्भा जी के विषय में सूचना

मिलते ही उसकी बांछें खिल उठीं। वह दौड़ पड़ा रायगढ़ की ओर। शम्भा जी आपने मित्र कवि कलश के साथ इस समय संगमेश्वर पहुँच चुके थे। वह एक बाड़ी में बैठे थे कि उन्होंने देखा कवि कलश भागे चले आ रहे हैं और उनके हाथ से रक्त बह रहा है। कलश ने शम्भा जी से कुछ भी नहीं बोला। बल्कि उनका हाथ पकड़कर उन्हें खींचते हुए बाड़ी के तलघर में ले गए। परन्तु उन्हें तलघर में घुसते हुए मुकर्रब खान के पुत्र ने देख लिया था। शीघ्र ही मराठा रणबांकुरों को बन्दी बना लिया गया। शम्भा जी व कवि कलश को लोहे की

जंजीरों में जकड़ कर मुकर्रब खान के सामने लाया गया। वह उन्हें देखकर खुशी से नाच उठा। दोनों वीरों को बोरों के समान हाथी पर लादकर मुस्लिम सेना बादशाह औरंगजेब की छावनी की ओर चल पड़ी।

औरंगजेब को जब यह समाचार मिला, तो वह खुशी से झूम उठा। उसने चार मील की दूरी पर उन शाही कैदियों को रुकवाया। वहाँ शम्भा जी और कवि कलश को रंग-बिरंगे कपड़े और विदूषकों जैसी घुंघरूदार लम्बी टोपी पहनाई गयी। फिर उन्हें ऊँट पर बैठाकर गाजे-बाजे के साथ औरंगजेब की छावनी पर लाया गया। औरंगजेब ने बड़े ही

अपमानजनक शब्दों में उनका स्वागत किया। शम्भा जी के नेत्रों से अग्नि निकल रही थी, परन्तु वह शान्त रहे। उन्हें बन्दीगृह भेज दिया गया। औरंगजेब ने शम्भा जी का वध करने से पहले उन्हें इस्लाम कबूल करने का न्योता देने के लिए रूहल्ला खान को भेजा।

नर केसरी लोहे के सींखचों में बन्द था। कल तक जो मराठों का सम्राट था। आज उसकी दशा देखकर करुणा को भी दया आ जाये। फटे हुए चिथड़ों में लिप्त हुआ उनका शरीर मिट्टी में पड़े हुए स्वर्ण के समान हो गया था। उन्हें स्वर्ग में खड़े हुए छत्रपति शिवाजी टकटकी बांधे हुए देख रहे थे। पिता जी-पिता जी, वे चिल्ला उठे। मैं आपका पुत्र हूँ। निश्चित रहिये। मैं मर जाऊँगा लेकिन२......

'लेकिन क्या शम्भा जी?' रूहल्ला खान ने एक ओर से प्रकट होते हुए कहा।

'तुम मरने से बच सकते हो शम्भा जी। परन्तु एक शर्त पर।' शम्भा जी ने उत्तर दिया- 'मैं उन शर्तों को सुनना ही नहीं चाहता। शिवाजी का पुत्र मरने से कब डरता है।'

'लेकिन जिस प्रकार तुम्हारी मौत यहाँ होगी उसे देखकर तो खुद मौत भी थर्रा उठेगी शम्भा जी'- रूहल्ला खान ने कहा।

'कोई चिन्ता नहीं, उस जैसी मौत भी हम हिन्दुओं को नहीं डरा सकती। संभव है कि तुम जैसे कायर ही उससे डर जाते हों।' शम्भा जी ने उत्तर दिया।

लेकिन रूहल्ला खान बोला- 'वह शर्त है बड़ी मामूली। तुझे बस इस्लाम कबूल करना है। तेरी जान बक्श दी जाएगी।' शम्भा जी बोले- 'बस रूहल्ला खान आगे एक भी शब्द मत निकालना मलेच्छ।' रूहल्ला खान अट्टहास लगाते हुए वहाँ से चला गया।

उस रात लोहे की तपती हुई सलाखों से शम्भा जी की दोनों

आँखे फोड़ दी गईं। उन्हें खाना और पानी भी देना बन्द कर दिया गया।

आखिर ११ मार्च को वीर शम्भा जी के बलिदान का दिन आ गया। सबसे पहले शम्भा जी का एक हाथ काटा गया, फिर दूसरा, फिर एक पैर को काटा गया और फिर दूसरा पैर। शम्भा जी का कर-पाद-विहीन धड़ दिन भर खून की तलैया में तैरता रहा। फिर सांयकाल में उनका सर काट दिया गया और उनका शरीर कुत्तों के आगे डाल दिया गया। फिर भाले पर उनके सर को टाँगकर सेना के सामने उसे घुमाया गया और बाद में कूड़े में फेंक दिया गया।

डॉ. विवेक आर्य

मरहठों ने अपनी छातियों पर पत्थर रखकर अपने सम्राट के सर का इंद्रायणी और भीमा के संगम पर तुलापुर में दाह संस्कार कर दिया। आज भी उस स्थान पर शम्भा जी की समाधि है। जो पुकार-पुकार कर वीर शम्भा जी की याद दिलाती है कि हम सर कटा सकते हैं पर अपना प्यारा वैदिक धर्म कभी नहीं छोड़ सकते।

मित्रों! शिवाजी के तेजस्वी पुत्र शम्भाजी के अमर बलिदान की यह गाथा हिन्दू माताएँ अपनी लोरियों में बच्चों को सुनायें तो हर घर से महाराणा प्रताप और शिवाजी जैसे महान् वीर जन्मेंगे। इतिहास के इन महान् वीरों के बलिदान के कारण ही आज हम गर्व से अपने आपको श्री राम और श्रीकृष्ण की संतान कहने का गर्व करते हैं। आईये! आज हम प्रण लें। हम ऐसे ही वीरों के पथ के अनुगामी बनेंगे।

बोलों वीर छत्रपति शिवाजी की जय।

बोलों वीर छत्रपति शम्भा जी की जय।।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०३/१८ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०३/१८** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री गोवर्धन लाल झंवर; सिहोर (म.प्र.), श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; शाहपुरा (भीलवाड़ा), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री बाबूलाल आर्य; मन्दसौर (म.प्र.), श्री रामप्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ.प्र.), श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्रीमती परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री किशनराम आर्य बीलू; नागौर (राज.), श्रीमती सुनीता सिंह भदौरिया; ग्वालियर (म.प्र.), श्री विनोद कुमार गुप्त; दिल्ली, श्री प्रधानजी; आर्यसमाज, बीकानेर (राज.), श्री श्याम मोहन गुप्ता; इन्दौर (म.प्र.), श्री रमेश चन्द्र गुप्ता; दिल्ली।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १७ पर अवश्य पढ़ें।

सृष्टि का रचयिता है।

वर्षों पूर्व नीत्से ने घोषणा की थी कि ईश्वर मर गया। यदि बात सचमुच ऐसी रही होती, तो इस जड़ जगत् का सम्पूर्ण ढाँचा ही लड़खड़ा गया होता एवं प्रकृति की हर प्रणाली में सर्वत्र अराजकता और अव्यवस्था ही झलकती-झाँकती दृष्टिगोचर होती, किन्तु प्रत्यक्ष में ऐसा होता कहाँ दीखता है? सूक्ष्म से सूक्ष्म परमाणुओं के अन्तराल में भी एक सुनिश्चित क्रमबद्धता पायी जाती है। इससे ऐसा लगता है इस संसार को संचालित करने वाली कोई परोक्ष सत्ता अवश्य होनी चाहिए।

एक जमाना था, जब लोग भोले, भावुक और विश्वासी हुआ करते थे। तब ईश्वरीय सत्ता के प्रति उनके मन में न कोई शंका थी, न संदेह। यह उनकी अच्छाई थी। बुराई यह थी कि इसके साथ-साथ नाना प्रकार के अंधविश्वास भी प्रचलित हुए थे, जिससे उनका विकास लम्बे समय तक अवरुद्ध बना रहा। बुद्धिवाद के बढ़ने के साथ-साथ कुप्रथाओं का अंत तो हुआ, पर एक इससे भी भयंकर आस्था-संकट आ खड़ा हुआ- नास्तिकवाद, जो ईश्वर के अस्तित्व को ही, संदेहास्पद मानने लगा और उसे तर्क, तथ्य व प्रमाण की कसौटी पर कसने का प्रयास में चेतनात्मक सत्ता की पुष्टि न हो सकी, तो कुछ सिरफिरे किस्म के दार्शनिकों ने यह कहना प्रारम्भ किया कि भगवान नाम की किसी सत्ता का संसार में कोई अस्तित्व नहीं। बस, यहीं से अनीश्वरवादी दर्शन की शुरुआत हुई।

पश्चिमी जगत् में इस विचारधारा का जन्म डार्विन से हुआ, जब उसने मनुष्य को बन्दर की औलाद बताया। यों प्रत्यक्षतः उसने आस्तिकवाद पर कोई प्रहार नहीं किया, पर परोक्ष रूप से इसका खण्डन कर दिया। बाद के अनुसंधानकर्त्ताओं ने उनके कथन को सही सिद्ध करने के लिए जोड़-गाँठ करके बन्दर से मनुष्य तक की विकास-यात्रा की एक क्रमबद्ध शृंखला तैयार कर दी। इतने पर भी बीच की उसकी कई कड़ियाँ अब तक ढूँढ़ी नहीं जा सकी हैं। इस महत्वपूर्ण त्रुटि से छुटकारा पाने के लिए वैज्ञानिकों ने एक नये सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इसका नाम रखा गया- 'जम्प थ्योरी' या 'सैलटैटरी थ्योरी'। इस सिद्धांत के अनुसार मानवी विकास में बीच-बीच में कई ऐसे पड़ाव आये, जहाँ प्रगति अचानक एकदम रुक गई और फिर अकस्मात् इतनी तेजी से आरम्भ हुई कि प्राणी की शारीरिक-संरचना पहले से काफी बदल गई। दूसरे शब्दों में विकासवाद के पक्षधरों ने इसे यात्रा के दौरान की एक लम्बी छलांग बतायी। उनके अनुसार इसी कारण बीच की दो मिलती-जुलती कड़ियाँ नहीं पायी जा सकीं। हाथी, घोड़े, ऊँट आदि जानवरों की आधी-अधूरी वंशावलियाँ भी इसी प्रकार येन-केन-प्रकारेण तैयार कर ली गईं। इतने पर भी आश्चर्य

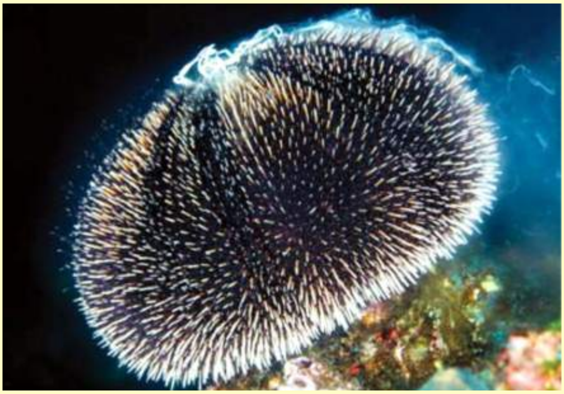

यह है कि कुछ एक प्रमाणों के आधार पर विज्ञान ने सम्पूर्ण जीव-जगत् को विकासवाद पर आधारित कैसे मान लिया? जबकि कितने ही जीव (जेलीफिश, स्पाँज, सीअरचिन, सीकुकुम्बर एवं अन्य) ऐसे हैं, जिनके किसी एक पूर्वज को भी सारी पृथ्वी पर अब तक खोजा नहीं जा सका है। ऐसे में विकासवादी अवधारणा को सच कैसे मान लिया जाय और इस तथ्य से सर्वथा इनकार कैसे किया जाय कि इनकी रचना के पीछे किसी अदृश्य सत्ता का हाथ है?

यदि जीव-जगत् को विकासवादी प्रक्रिया की परिणिति माना जाय, तो फिर वनस्पति-जगत् को भी इसमें सम्मिलित करना

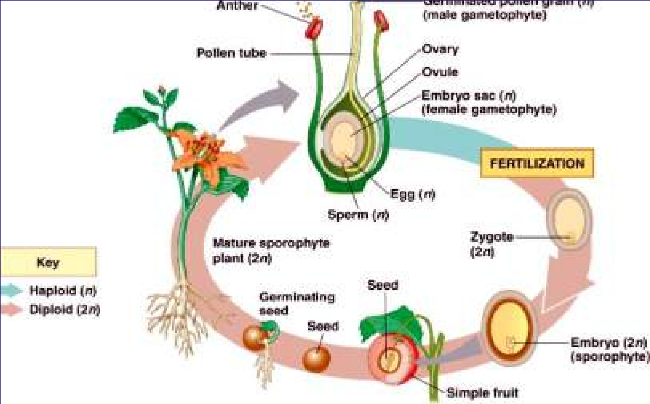

पड़ेगा, जबकि पादप-जगत् में ऐसा कोई सिद्धांत नहीं है, जिसमें एक वृक्ष से दूसरे का उद्भव बताया गया हो। हाँ, किसी प्राकृतिक माध्यम अथवा कृत्रिम ढंग से दो पौधों में परस्पर परागण की क्रिया हो जाय, तो उससे तीसरी प्रजाति की उत्पत्ति हो सकती है, पर नैसर्गिक रूप से उसमें परिवर्तन तब तक नहीं होगा, जब तक किसी बाह्य कारक के कारण उसका पर-परागण न हो जाय, जबकि (विकासवाद के अनुसार) प्राणियों की दुनिया में एक जीव से दूसरे का प्रादुर्भाव लाखों-करोड़ों साल की प्रगति-यात्रा के दौरान होने वाले स्वाभाविक परिवर्तन को माना जाता है। यदि ऐसा हुआ तो यह सृष्टि में विकास सम्बन्धी अंतर्विरोध होगा, क्योंकि एक ही क्रिया की दो भिन्न प्रक्रियाएँ प्रकृति में अब तक नहीं देखी गईं। ऐसे में हर जन्तु, जाति और वृक्ष को बिलकुल स्वतंत्र मान कर चलना ही बुद्धिमानी होगी। यह तभी संभव है, जब इसके पीछे किसी स्रष्टा का हाथ होना माना जाय।

इसी प्रकार का मंतव्य प्रकट करते हुए कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के मूर्धन्य वनस्पति शास्त्री एवं प्रख्यात विकासवादी ई-जे कॉरनर कहते हैं कि यदि पूर्वाग्रह रहित होकर कहूँ तो पौधों के अब तक के जीवाश्म-रिकार्ड विकासवादी मान्यता को हतोत्साहित करते और किसी अविज्ञात रचयिता का पृष्ठ पोषण करते पाये जाते हैं। इसी प्रकार के विचार प्रकट करते हुए प्रसिद्ध जेनेटिसिस्ट एवं विकासवादी रिचर्ड बी-गोल्ड्समिड कहते हैं कि समस्त प्राणी और पादप अकस्मात् प्रकट हुए और बिना किसी परिवर्तन के वे अब तक बने हुए हैं। एक अन्य विकासवादी जार्ज गेलार्ड सिम्पसन का कहना है कि प्री कैम्ब्रिज युग के जीवाश्मों की अनुपस्थिति विकासवादी अवधारणा के लिए पहेली बनी हुई है। वे कहते हैं कि यह विकासवाद की अपेक्षा जीवों का 'स्वतंत्र उद्भव' जैसी मान्यता के आधार पर आसानी से सुलझायी जा सकती है। बरमिंघम विश्वविद्यालय के एनाटानी विभाग के अध्यक्ष लार्ड सोली जुकरमैन ने जीवन पर्यन्त अपने अन्वेषण के आधार पर निष्कर्ष निकाला है कि मनुष्य यदि गोरिल्ला सदृश्य प्राणी से विकसित हुआ होता तो वह अपने जीवाश्मों में बिना किसी परिवर्तन के ज्यों-का-त्यों बना रहता, जबकि जीवाश्म विज्ञानियों ने मनुष्य के तथाकथित पूर्वजों के ढेर सारे जीवाश्म खोज निकालने का दावा किया है। इनका यह दावा जुकरमैन के निष्कर्ष के विरुद्ध है। इससे यही सिद्ध होता है कि मनुष्य आरम्भ से ही मनुष्य था और गोरिल्ला, गोरिल्ला। यह विचारधारा भी किसी विधाता की उपस्थिति का संकेत करती है।

जीव-विकास के समर्थक जीवन का प्रादुर्भाव जीवन विहीन रसायनों से मानते हैं। उनके अनुसार आदिमकाल में कुछ रसायनों की परस्पर प्रतिक्रिया से अमीनो अम्ल बने, जो बाद में जीवन-विकास के लिए उत्तरदायी हुए। इस प्रकार बने एक कोशीय जीवों से कालक्रम में जटिल संरचना वाले बहुकोशीय जीवों की उत्पत्ति हुई। यदि जीव-उद्भव सम्बन्धी इस मान्यता को सही माना गया, तो अनेक ऐसे प्रश्न उठ खड़े होंगे, जिनका उत्तर दे पाना कठिन होगा, यथा- यौगिकों को पारस्परिक प्रतिक्रिया की प्रेरणा कहाँ से मिली? जड़ पदार्थों में चेतना का आविर्भाव किस भाँति सम्भव हो सका? आदि। इस स्थिति में किसी सूक्ष्म रचनाकार का अस्तित्व स्वीकार कर लेने से जीव-विकास सम्बन्धी विवेचना अत्यन्त सरल हो जाती है। यदि ऐसा नहीं माना जा सका और अमीबा से ही जीवोत्पत्ति का दुराग्रह अपनाया गया, तो ऐसी विसंगतियाँ सामने आती हैं, जिन्हें किसी कदर स्वीकार नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए आधुनिक विकासवाद अथवा नव डार्विनवाद को लिया जा सकता है। इसके अनुसार म्यूटेशन विकास का निमित्त कारण है। उल्लेखनीय है कि म्यूटेशन गुणसूत्रों अथवा जीन्स में आकस्मिक परिवर्तन की एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। विशेषज्ञों का मत है कि इस परिवर्तन की दर का पता लगाना संभव है और यह भी अन्दाज लगाना शक्य है कि कितने अनुकूल म्यूटेशन विकासवादी परिवर्तन के लिए अभीष्ट होंगे। यह गणना भी सरल है कि एक अमीबा के पूर्ण मनुष्य में रूपान्तरण में कितना लम्बा कालखण्ड आवश्यक होगा। इन्स्टीट्यूट फॉर क्रियेशन रिसर्च, सैनडियागो, कैलीफोर्निया के एसोसिएट डायरेक्टर डूने टार्ल्बट गिश, जो कि विकासवाद के प्रबल विरोधी हैं, के अनुसार गणितज्ञों के एक दल ने जब इसकी गणना की तो प्राप्त समय पृथ्वी की उत्पत्ति से कई अरब लम्बा पाया गया। वैज्ञानिक पृथ्वी को ५ अरब वर्ष पुराना मानते हैं, जबकि विकासवादी प्रक्रिया से मानवी प्रादुर्भाव का समय अनेकों गुणा विशाल मिला। यह विरोधाभास विकासवाद का खण्डन करता है और जीवन विकास सम्बन्धी किसी ऐसे मतवाद पर विचार करने के लिए विवश करता है, जो सर्वमान्य हो। ऐसी स्थिति में डूने की 'क्रियेशन थ्योरी' ही ज्यादा सटीक और सारगर्भित प्रतीत होती है, जिसमें उसने सृष्टि-संरचना के पीछे भगवान को प्रमुख माना और कहा है कि मनुष्य समेत हर प्राणी का

पदार्पण स्वतंत्र सत्ता के रूप में हुआ है, उनमें किसी का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं। एक कोशिका अमीबा आरम्भ में भी अमीबा था, अब भी अमीबा है और जब तक यह सृष्टि रहेगी, वह अपने उसी रूप में विद्यमान रहेगा। मनुष्य और बन्दर आदि काल से वही थे और अनन्त काल तक उसी कलेवर को अपनाये रहेंगे।

यहाँ भौतिकी के एक प्रसिद्ध सिद्धान्त पर तनिक चर्चा कर लेना अनुचित न होगा। थर्मोडायनामिक्स के दूसरे नियम के अनुसार सम्पूर्ण प्राकृतिक तंत्र में व्यवस्था से अव्यवस्था की ओर जाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। यह पूरे ब्रह्माण्ड में सूक्ष्म और स्थूल स्तर पर समान रूप से देखी जाती है और अब तक कभी असफल होते हुए नहीं पायी गई है। विकासवाद का प्रतिपादन इससे ठीक उलटा है। वह कहता है कि समस्त निसर्ग का अव्यवस्था से व्यवस्था (कुछ अव्यवस्थित रसायनों के व्यवस्थित संयोग से अमीबा की उत्पत्ति और फिर उससे अधिकाधिक जटिल जीवों का विकास) की ओर विकास करने का आम स्वभाव है। उसके अनुसार यह स्वभाव सूक्ष्म परमाणुओं से लेकर बड़े पदार्थों तक में सर्वत्र दिखाई पड़ता है। ज्ञातव्य है कि प्रकृति की एक ही प्रक्रिया से सम्बन्धित दो विपरीत सिद्धान्त लागू नहीं हो सकते। उपरोक्त दोनों नियमों में से सत्य कोई एक ही हो सकता है। ज्ञातव्य यह भी है कि थर्मोडायनामिक्स के सुस्थापित दूसरे नियम पर अंगुली उठाने का साहस अभी तक किसी ने नहीं किया। ऐसी स्थिति में विकासवादी प्रक्रिया संशय के घेरे में आ जाती है।

इस दशा में यदि आस्तिकवाद के ईश्वर की मान्यता को स्वीकार लिया जाय, तो सृष्टि रचना सम्बन्धी व्याख्या अत्यन्त सरल हो जाती है। वैज्ञानिक डूने गिश ने इसी का आश्रय लेते हुए विज्ञान और विकासवाद के बीच संव्यास विसंगतियों के आधार पर विकासवाद को अमान्य कर दिया। वे अपने लम्बे शोध के उपरान्त उसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं, जिसे भारतीय अध्यात्म बहुत पहले से कहता आ रहा है। उन्होंने कण-कण में भगवान की उपस्थिति का समर्थन कर अन्ततः उस उपनिषद् वाक्य की ही पुनरुक्ति की है, जिसमें 'ईशावास्यमिदं सर्वं......' कहकर उसे सर्वव्यापी सर्वनियन्ता बताया है। इससे जीव-उत्पत्ति और सृष्टि-विकास सम्बन्धी सारी उलझनें समाप्त हो जाती है। फिर हमें न तो यह कहने की जरूरत पड़ेगी कि मनुष्य बन्दर की संतान है और न यह कि संसार स्वतः उत्पन्न है।

साभार- डॉ. गायत्री परिवार
ए- २५, वैशाली नगर
जयपुर- ३०२०२१ (राज.)

पूरा नाम–
चलभाष–

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०५/१८

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (सप्तम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	त्म १	■	२	र २		२ श्व	२	■	■
३	जु	३	द ३	■	■	४	व	४	र ४
५	य ५	■	६ स्व		६	■	७	७	न्त्र ७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. वैशेषिक और न्याय किस शब्द से अनीश्वरवादी नहीं हैं?
२. जगत् का निमित्त कारण कौन है?
३. 'सपर्य्यागाच्छुक्रमकायम्' किस वेद में उपलब्ध है?
४. ईसा आदि भी किसके नाम नहीं हैं?
५. ईश्वर अगर पापों को क्षमा करने लगे तो क्या नष्ट हो जाएगा?
६. अपने कर्त्तव्य कर्मों में जीव कैसा है?
७. जिसके आधीन शरीर, प्राण, इन्द्रिय और अन्तःकरणादि हों वह क्या कहलाता है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०३/१८ का सही उत्तर

१. अविद्यादिमल २. नहीं ३. पुरुषार्थ
४. अन्तःकरण ५. आत्मा ६. व्यापक ७. ज्ञान

"विस्तृत नियम पृष्ठ १७ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जून २०१८

श्रीमतीजी टेलीविजन पर कार्यक्रम देख रही थीं, और मैं कमरे के एक कोने में कुर्सी पर बैठा अखबार के पन्ने पलट रहा था । अचानक उन्होंने ने आवाज दी, 'अरे भई, ये 'लिवे देबते' क्या होता है?
'लिवे देबते'? देखूँ, कहाँ लिखा है? 'कहते हुए मैं उनकी ओर मुखातिब हुआ। उन्होंने टीवी की ओर इशारा किया। मैंने उस ओर नजर घुमाई तो पता चला कि वे समाचार चैनलों पर कूदते-फांदते 'एबीपी न्यूज' पर आ टिकी हैं। पर्दे पर चैनल नं., समय, कार्यक्रम, आदि की जानकारी अंकित थी। चैनल बदलने पर इस प्रकार की जानकारी हिन्दी में हमारे टीवी के पर्दे पर २-४ सेकण्ड के लिए सदैव प्रकट होती है। उस विशेष मौके पर, राजनेता, पत्रकार तथा विशेषज्ञों के ५-६ जनों के जमावड़े के बीच किसी मुद्दे को लेकर बहस चल रही थी ।
मैंने पाया कि टीवी पर्दे पर उपलब्ध जानकारी में वास्तव में

'लिवे देबते' भी शामिल था। उसे देख एकबारगी मेरा भी माथा चकराया। इस 'लिवे देबते' का मतलब क्या हो सकता है? अपने दिमाग का घोड़ा सरपट दौड़ाते हुए मैं उसकी खोज में मन ही मन निकल पड़ा। मेरे दिमाग में यह बात कौंधी कि यह तो हिन्दी के कोई शब्द लगते नहीं। स्वयं से सवाल किया कि ये कहीं किसी अन्य भाषा के शब्द तो नहीं जो अंगरेजी के रास्ते यहाँ पहुँचे हों? रोमन में ये कैसे लिखे जाएँगे यह जिज्ञासा भी मन में उठी और मुझे तुरन्त बुद्धत्व प्राप्त हो गया। समझ गया कि यह तो 'LIVE DEBATE' है जो उस कार्यक्रम का सार्थक शीर्षक था। वाह! वाह रे चैनल वालो, कार्यक्रम को हिन्दी में 'जीवन्त बहस' या इसी प्रकार के शब्दों में लिख सकते थे अथवा इसे 'लाइव डिबेट' लिख देते। न जाने किस मशीनी 'ट्रांसलिटरेशन' (Transliteration) प्रणाली का उन्होंने प्रयोग किया कि यह 'लिवे देबते' बन गया। ध्यान दें कि रोमन अक्षरों के लिए L= ल, I= ई, V= व, E= ए, D= द, B= ब, A= अ, T= त, का ध्वन्यात्मक संबंध स्वीकारने पर उक्त लिप्यांतरण मिल जाता है। परन्तु अंगरेजी में रोमन अक्षरों की ध्वनियाँ इतनी सुनिश्चित नहीं होतीं यह सम्बन्धित लोग भूल गये ।
और जब दूसरे दिन फिर चैनल को हम देखने बैठे तो देखा कि गलती दूर हो चुकी है। पर्दे पर 'लाइव डिबेट' अंकित नजर आ रहा था।
इस घटना ने इस तथ्य की ओर हमारा ध्यान खींचा कि हमारे देश में सर्वत्र अंगरेजी छाई हुई है और हिन्दी माध्यमों पर परोसे जाने वाला ज्ञान अंगरेजी में उपलब्ध जानकारी के अनुवाद 'लिप्यांतरण' पर आधारित होता है अथवा तत्संबंधित उच्चारण को देवनागरी में प्रस्तुत किया जाता है । इस प्रक्रिया में कभी-कभी हास्यास्पद प्रस्तुति भी पेश हो जाती है, क्योंकि अनुवाद करने वाला शब्दों से सम्बन्धित ध्वनियों से सदैव वाकिफ नहीं होता और शायद उसे किसी स्रोत से जानने की कोशिश भी नहीं करता। दो-एक उदाहरणों पर गौर करें-
१. समाचार पत्र हिन्दुस्तान में मुझे जर्मनी की समाचार, रेडियो, टीवी संस्था का कभी-कभार उल्लेख देखने को मिल जाता है। लिखा रहता है 'डाइचे विले' (Deutsche Welle), जब कि होना चाहिए था 'डाइच वेलऽ'- निकटतम उच्चारण। ऐसा क्यों है? इसका कारण मेरी समझ में इस तथ्य को नजरअंदाज करना है कि अधिकांश यूरोपीय भाषाओं की लिपि मूलतः रोमन है, जिसे लैटिन भी कहते हैं। आवश्यकतानुसार कहीं-कहीं विशेषक चिह्नों (diacritics) का प्रयोग भी होता है। किन्तु हर भाषा के उच्चारण के नियम अलग-अलग हैं जो बहुधा अंगरेजी से पर्याप्त भिन्न रहते हैं। उच्चारण की दृष्टि से फ्रांसीसी एवं तत्पश्चात् अंगरेजी घटिया मानी जाती हैं। जर्मन भाषा के नियम अधिक साफ-सुथरे हैं। कुछ भी हो, किसी व्यक्ति, संस्था अथवा

शहर आदि विदेशी नामों का सम्बन्धित भाषा के बोलने वालों के उच्चारण से भिन्न नहीं होना चाहिए। वह नाम उस भाषा में भी रोमन में ही लिखा जाता है तो क्या उसे हम अंगरेजी के हिसाब से बोलें, क्योंकि हम केवल अंगरेजी से सुपरिचित हैं? जर्मन में 'आल्बर्त आइंस्ताइन' बोला जाता है न कि 'ऐल्बर्ट आइंस्टीन'। किसे सही माना जाए? इन बातों की जानकारी मुझे तब हुई जब एम.एससी. पाठ्यक्रम के दौरान मुझे एक आस्ट्रियाई सज्जन से प्राथमिक जर्मन पढ़ने का मौका मिला । (आस्ट्रिया की भाषा भी जर्मन है ।)

(२) मैं जब एम.एससी. में पढ़ता था तो हमें आरम्भ के कुछ समय तक रज्जू भैया जी (जो कालान्तर में आर.एस.एस. प्रमुख बने थे) ने भी पढ़ाया था। हम लोग फ्रांसीसी वैज्ञानिक Langevin को 'लांजेविन' कहते थे। उन्होंने ही हमें बताया कि यह फ्रांसीसी नाम असल में 'लाजवां' बोला जाता है। इसी प्रकार यह भी जाना कि वैज्ञानिक Fermat का नाम फर्मा है न कि 'फर्मैट'।

(३) ब्रिटेन का एक शहर है Leicester जहाँ अनेक भारतीय बसे हैं। मैं उसे 'लाइसेस्टर' कहता था। इंग्लैंड पहुँचने पर पता चला कि वह 'लेस्टर' है।

(४) दो-तीन रोज पहले अखबार में अमेरिका के Yosemite राष्ट्रीय उद्यान (कैलिफोर्निया) के बारे में खबर थी। उसमें इस स्थल को 'योसेमाइट' कहा गया था। बहुत अन्तर तो नहीं, फिर भी यह 'योसेमिती' कहा जाता है, जो स्पेनी भाषा पर आधारित है जिसका प्रचलन आरम्भ से ही उस क्षेत्र में काफी रहा है। वहाँ पहुँचने पर मुझे पता चला कि जिस शहर को मैं 'सैन जोस' (San Jose) समझता था वह दरअसल 'सान होजे' कहलाता है।

किसी भाषा का विस्तृत ज्ञान कदाचित् किसी को नहीं होता है। किन्तु जो लोग पत्रकारिता जैसे व्यवसाय में लगे हों उन्हें सही-सही वर्तनी एवं उच्चारण जानने की उत्कण्ठा होनी ही चाहिए। आज के युग में शब्दकोश तथा इण्टरनेट काफी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

– योगेन्द्र जोशी

महाराणा प्रताप जयन्ती पर विशेष

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप

भारत –जननी का मान किया,
बलिवेदी पर बलिदान किया।
अपना पूरा अरमान किया,
अपने को भी कुर्बान किया।।

रक्खी गर्दन तलवारों पर,
थे कूद पड़े अंगारों पर।
उर ताने शर–बौछारों पर,
धाये बरछी की धोरों पर।।

झनझन करते हथियारों में,
अरि–नागों की फुफकारों में।
जंगीगज– प्रबल कतारों में,
घुस गये स्वर्ग के द्वारों में।।

इनमें कुछ ऐसी आन रही,
कुछ पुश्तैनी यह बान रही।
मेवाड़-देश के लिए सदा,
वीरों की सस्ती जान रही।।

कहते थे भाला आने दो,
चिल्ले पर तीर चढ़ाने दो।
आगे को पैर बढ़ाने दो,
रण में घोड़ा दौड़ाने दो।।

देखो फिर कुन्तल बालों की,
कुछ करामात करवालों की।
इस वीर-प्रसवनी अवनी के,
छोटे से छोटे बालों की।।

बसने तक को है ग्राम नहीं,
जंगल में रहते धाम नहीं।
पर भीषण यही प्रतिज्ञा है,
अरि कर सकते आराम नहीं।।

हम माता के गुण गायेंगे,
बलि जन्म-भूमि पर जायेंगे।
अपना झण्डा फहरायेंगे,
हम हाहाकार मचायेंगे।।

साभार- अन्तर्जाल

शून्य होती संवेदनाएँ

आज के समय में व्हाट्सएप सबसे ज्यादा प्रयोग में लिया जाता है वह चाहे सूचना का क्षेत्र हो या मनोरंजन, हर क्षेत्र में इसका उपयोग अधिकाधिक हो रहा है। पुरानी कहावत है कि एक सिक्के के दो पहलू होते हैं। उसी तरह व्हाट्सएप के भी दो पहलू हैं। यह लाभकारी है तो विनाशकारी भी। हर व्यक्ति अपने मोबाइल पर इसमें सक्रिय है और अधिक से अधिक वीडियो शेयर करने की कोशिश में रहता है। सभी इस कोशिश में लगे रहते हैं कि उनके वीडियो को अधिक से अधिक पसन्द (लाइक) किया जाए। इन कोशिशों में व्यक्ति अपनी दया भावना, संवेदना को ताक में रख केवल वीडियो बनाने में लगा रहता है। अनेक बार छोटे-मोटे अपराध के अथवा एक्सीडेन्ट के वीडियो देखने में आते हैं। यह सुनिश्चित है कि वीडियो बनाने वाले यदि वीडियो बनाकर व्हाट्सएप आदि सोशल मीडिया के माध्यम से उसको प्रेषित कर 'लाइक्स' की संख्या से होने वाले क्षणिक सुख का लोभ छोड़ दें, तो निश्चित ही वे अपराध कारित होने से रोकने में, अथवा दुर्घटना के पश्चात् हताहत को अस्पताल पहुँचाने में सहायक होकर एक अच्छे नागरिक का कर्त्तव्य निभाने के साथ-साथ किसी की जीवन रक्षा भी कर सकते हैं। परन्तु सोशल मीडिया में छा जाने की लत उन्हें कर्तव्यच्युत् कर देती है। कुछ महिनों पहले एक बंगाली मजदूर की हत्या का वीड़ियो, वो भी एक नाबालिग बच्चे द्वारा बनाया गया, उसे वायरल किया गया। माना कि वो एक अलग कारण था वो 'लाइक्स' से जुड़ा नहीं था पर इसमें उस बच्चे की मानवता तो खत्म हो गयी। मुझे उस समय बड़ा धक्का लगा जब मेरे करीबी रिश्तेदार ने एक एनडरॉयड सेलफोन लिया और उस पर वे एक वीडियो देख रहे थे। वीडियो अत्यन्त हृदय विदारक था जिसमें पटरी पार करते समय एक अपंग व्यक्ति की बाइक (दुपहिया) पटरी में फस जाती है और ट्रेन आ जाती है, उस समय का दृश्य था। उस व्यक्ति के साथ इसकी मासूम बच्ची भी थी। एक बार तो वो अपनी बच्ची को लेकर साइड में आ जाता है फिर अपनी भावनाओं को न रोक पाने के कारण बच्ची को एक ओर छोड़ फंसी बाइक को निकालने की कोशिश करता है। कोशिश में कामयाब तो होता है पर बाइक उस पर गिर जाती है। इधर बच्ची रोती हुई पापा के करीब आती है तो उसका पैर पटरी में फँस जाता है और ट्रेन उसको रौंदते हुए निकल जाती है। आप सोच नहीं सकते कि उस पिता पर क्या बीती होगी जब उस मासूम का खून उसके चेहरे पर लगा होगा। यह सत्य घटना है या नही, पता नही। पर है, तो क्या 'वीडियो मेकर' उस मासूम बच्ची का हत्यारा नहीं? 'वीडियो मेकर' ने कुछ भी मदद नहीं की जबकि वह पटरियों के बीच आती बच्ची को आसानी से दूर हटा सकता था। पर ऐसा न कर सिर्फ 'थ्रिल'- प्रसारण के लोभ में कर्तव्यच्युत् रहा। ऐसे एक नही सैकड़ों उदाहरण दिए जा सकते हैं। मैं सोचती हूँ कि व्यक्ति नकारात्मक चीजों के पीछे क्यों भागता है। दुर्घटनाओं के समय मदद की बजाय व्हाट्सएप के लिए वीडियो बनाने की लत क्या हमारे लिए खतरनाक साबित नहीं हो रही है? हम अपनी संवेदनाओं को खो रहे हैं। हमारी मानवता शर्मसार हो रही है। यदि आप ईश्वर में विश्वास रखते हैं तो सबसे बड़ी सेवा मनुष्य की सेवा है। अतः मानवोचित कर्तव्य-भावना को कभी विस्मृत न करें।

- दुर्गा गोरमात
नवलखा महल, गुलाबबाग

समाचार

डॉ. सुभाष वेदालंकार को बधाई

संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सुभाष वेदालंकार की नवीनतम कृति अमेरिका-वैरावम् कालिदास एवं अभिज्ञान शाकुंतलम का लोकार्पण वेद रक्षा प्रतिष्ठान, संस्कृत विभाग पंजाब विश्वविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एवं राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा ६ अप्रैल को आयोजित एक समारोह में किया गया जिसमें प्रो. पी.एन शास्त्री, (कुलपति राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान विश्वविद्यालय) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इसी अवसर पर आचार्य (डॉ.) सुश्रुत सामश्रमी की कृति 'वैदिक वाङ्मये व्यापार प्रबन्धनम्' का भी लोकार्पण किया गया।

ध्यातव्य है कि प्रो. सुभाष वेदालंकार द्वारा अब तक ६५ मौलिक संस्कृत रचनाओं का प्रणयन किया जा चुका है। जिनमें लगभग ५०००० हजार पन्नों में तो काव्य रचनाएँ हैं। आपके द्वारा रचित महाकाव्यों पर शोध छात्रों द्वारा पीएच. डी. की जा चुकी हैं। निश्चित रूपेण डॉ. सुभाष संस्कृत-सेवा में संलग्न एक ऐसे विद्वान् हैं जिन पर आर्य जगत् को गर्व है। न्यास परिवार की ओर से डॉ. सुभाष जी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

सोजत में नवसंवत्सर पर विशाल यज्ञ का आयोजन

भारतीय नवसंवत्सर अभिनन्दन के अवसर पर स्थानीय मोदी मोहल्ले में स्वतन्त्रता सेनानी रुचिर परिवार द्वारा विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य यजमान की भूमिका समाजसेवी पार्षद मंजु-कैलाश अखावत ने निभायी। आर्यसमाज की प्रधाना श्रीमती लीलावती आर्या के पौरोहित्य में समाजसेवी राजेन्द्र अग्रवाल, ओमप्रकाश राठी, पार्षद किरण सोलंकी, आर्यसमाज के संरक्षक दलवीर राय व मन्त्री हीरालाल आर्य, संगीतकार रवीन्द्र कुमार भटनागर, अरविन्द राय, समाजसेवी जवरीलाल बोराणा, युवा उद्यमी कन्हैयालाल गुप्ता, सुरेन्द्र भटनागर, कवि नवनीत राय 'रुचिर', श्रीमती अयोध्या अग्रवाल, स्नेहलता लढ़्ढ़ा 'संजु', प्रेमलता तोषनीवाल, अनीता पलोड़, उषा सैन सहित नगर के गणमान्य नागरिकों ने यज्ञ में अपनी आहुतियाँ दीं। इस अवसर पर भजन कीर्तन आदि भी हुए। सभी का आभार समारोह संयोजिका योग शिक्षिका श्रीमती वीणा भटनागर ने ज्ञापित किया।

- नवनीत राय, सोजत शहर, चलभाष- 'रुचिर' ९४१३०८३९७३

नवसंवत्सर पर यज्ञ द्वारा जीव मात्र के कल्याण की कामना

मगरा पूंजला स्थित आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनिनगर व नृसिंह जी की प्याऊ मार्केट एसोसियेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित भारतीय नववर्ष व आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया कि नववर्ष पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा शिवराम शास्त्री व गजेसिंह द्वारा नवसंवत्सर पर जीव मात्र के कल्याण, समाज, परिवार, राष्ट्र में सुख, मंगल व समृद्धि की भावना से यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की गईं।

इस कार्यक्रम में आर्य समाजों के सदस्य एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। अन्त में मंत्री आर्य किशनलाल द्वारा धन्यवाद दिया।

- कैलाश चन्द्र आर्य, प्रधान, ९४६००८३१३३

आर्यसमाज स्थापना दिवस दो दिवसीय समारोह पूर्वक तिलकनगर कोटा में सम्पन्न

आर्यसमाज के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए सभी आर्यजन एवं आर्यसमाज संकल्पित होकर कार्य करें। इसके लिए चरणबद्ध कार्यक्रम बनाकर गति प्रदान करें। उक्त विचार आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने व्यक्त किए।

छावनी कोटा स्थित तिलक नगर आर्यसमाज में आयोजित समारोह में उन्होंने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के लिए आर्य महापुरुषों के जीवन के विभिन्न उदाहरणों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान् वृद्धिचन्द शास्त्री, कार्यक्रम की मुख्य अतिथि नगर निगम कोटा की उपमहापौर श्रीमती सुनीता व्यास, आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पण्डित अमरसिंह के विचार सराहनीय रहे।

इस अवसर पर आर्यसमाज तिलक नगर द्वारा महर्षि दयानन्द वेदप्रचार समिति के अध्यक्ष श्रीचन्द गुप्ता का शॉल ओढ़ाकर अभिनन्दन किया गया।

- अर्जुनदेव चढ़्डा, जिला प्रधान

आयुष्मान गौरव आर्य का शुभ विवाह

न्यास के न्यासी श्री मोती लाल आर्य एवं श्रीमती चन्दादेवी (आबू रोड)के सुपुत्र आयुष्मान गौरव आर्य का शुभ विवाह श्रीमती विमला देवी एवं श्री जेठमल जी चौहान की सुपुत्री सौ. कां. नीलम के साथ दिनांक १८ फरवरी २०१८ को सिरोही में सम्पन्न हुआ। नवदम्पति पर परमात्मा की सर्वविद् कृपा हो। इस भावना के साथ न्यास और सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यों की ओर से अनेकशः शुभकामनाएँ। - अशोक आर्य, का. अध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के द्वारा शिविर का आयोजन

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्य वीरांगनाओं को राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण जैसी विधा में निष्णात करने के उद्देश्य से २७ मई से ३ जून २०१८ तक आर्य कन्या इन्टर कॉलेज, मुट्ठीगंज, इलाहबाद उत्तर प्रदेश में उक्त शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसकी संचालिका मृदुला जी चौहान से व शिविराध्यक्ष श्री पंकज जायसवाल से क्रमशः ९८१०७०२७६० एवं ९४१५३६५५७६ पर सम्पर्क किया जा सकता है।

गुरुकुल का महोत्सव मई में

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबूपर्वत का २८वाँ वार्षिकोत्सव २६, २७ एवं २८ मई २०१८ को गुरुकुल परिसर, आबूपर्वत में मनाया जा रहा है। अनेकों सन्त, विद्वान् व भजनोपदेशक पधारेंगे। सभी आर्यजनों को पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी व आचार्य ओमप्रकाश जी की ओर से आमंत्रण है। सम्पर्क- ९४१४५८९५१०

पतंजलि योग समिति, कोटा द्वारा तीन दिवसीय दिव्य योग कथा

योग द्वारा ही दुखों से मुक्ति संभव है। योग के द्वारा मनुष्य वृत्तियों को

नियंत्रित कर सकता है। नियंत्रित मन ही दुःखों से बचाता है। सांसारिक सुख अस्थिर है। उनसे पूर्ण सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। योग के उपायों के सेवन से शारीरिक लाभ के साथ मानसिक व आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति होती है। उक्त विचार दिव्य योग कथा में आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने व्यक्त किए।

राज्य प्रभारी अरविंद पाण्डेय ने बताया कि तीन दिवसीय योग कथा में महर्षि पतंजलि के योग सूत्रों से जीवन की समस्याओं के समाधान के बारें में बताया गया।

इस अवसर पर आत्मा-परमात्मा, कर्म-कर्मफल सिद्धान्त, मन-बुद्धि, चित्त, अहंकार के बारे में महर्षि पतंजलि के दृष्टिकोण को बतलाया गया। अजय राव, संदीप शर्मा और हर्षित खण्डेलवाल ने ईश्वर भक्ति के भजनों से वातावरण को भक्तिमय कर दिया। कथा का प्रारम्भ द्वीप प्रज्ज्वलन से हुआ। योग कथा में योग साधक-साधिकाऐं व अन्य भक्त उपस्थित रहे। - प्रदीप शर्मा, जिलाध्यक्ष, पतंजलि योग समिति, कोटा

शोक संवेदना

आर्य समाज, उदयपुर के सदस्य एवं नवलखा महल के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री भँवर लाल जी शर्मा का ३० मार्च २०१८ को ८३ वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे लम्बे समय से बीमार थे। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करता है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

आर्य समाज, हिरणमगरी की सदस्या श्रीमती इन्दुबाला खोसला के पूज्य पिताजी श्री बसंतलाल जी खोसला का दिनांक ३ अप्रैल २०१८ को निधन हो गया। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करता है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि परिवारीजनों को इस दुःख को सहने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करें।

अत्यन्त दुःख का विषय है कि वैदिक धर्म के प्रहरी पूर्व मंत्री स्मृति न्यास, आर्य समाज मगरा पूंजला के पूर्व प्रधान एवं सेवा निवृत्त प्रधानाध्यापक श्रीमान् जगदीश सिंह जी आर्य का देहावसान हो गया। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार, उदयपुर के सभी सदस्यों को बहुत दुःख हुआ है। हम उनकी आत्मा की चिर शान्ति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं और इस दुःख की घड़ी में परिवार जन को यह दुःख सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

प्रतिस्वर

श्रीमान् अशोक आर्य जी, सादर नमस्ते। सत्यार्थ सौरभ तथा अन्य वैदिक साहित्य के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार का कार्य किया जा रहा है वह अत्यन्त प्रशंसनीय तथा सराहनीय है उसके लिए साधुवाद। - राजेश भटनागर, जयपुर

आदरणीय अशोक आर्य, सादर नमस्ते।

सत्यार्थसौरभ का अप्रैल २०१८ का अंक प्राप्त हुआ, जिसके आत्म निवेदन अर्थात् सम्पादकीय 'साधु की कुटिया अथवा साधु की कुतिया' को पढ़कर मन में अति प्रसन्नता हुई है। आपने अंग्रेजी भाषा के अन्धानुकरण करते समाज का ध्यान इस ओर आकर्षित किया है कि हम अंग्रेजी भाषा के प्रति अपनी आसक्ति छोड़ने का प्रयास करें और वैज्ञानिक भाषा हिन्दी का संरक्षण करें।

भारत में समस्त विधानों की रचना अंग्रेजी भाषा में होती है और विधान निर्माता उसे ही प्रमाणिक मानते हैं जो हमारी संस्कृति एवं भाषा के लिए घातक है। कई बार इन विधानों का हिन्दी में अनुवाद विसंगत हो जाता है। यहाँ एक बात और उल्लेखनीय है कि इलेक्ट्रोनिक्स युग में जो भी अनुवाद के ऑनलाइन ऐप्स देखे जा रहे हैं जैसे गूगल ट्रान्सलेटर यदि हम उन्हें प्रयोग में लेते हैं तो पाते हैं कि अंग्रेजी भाषा से हिन्दी भाषा में अनुवाद उनसे नहीं हो पाता है।

हिन्दी की वैज्ञानिकता को स्थापित करने में आपका यह सम्पादकीय मील का पत्थर साबित होगा। धन्यवाद। - डॉ. संगीता श्रीमाली, चित्तौड़गढ़

कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद में एक नया प्रकल्प

जो कन्याएँ कॉलेज की डिग्रियाँ लेकर के नौकरी के चक्कर में न पड़कर वेद विदुषी बनकर सम्पूर्णतः समाज कल्याण में अपना जीवन बिताने की आकांक्षा रखती हैं, उनके लिए पूर्ण आर्ष प्रणाली से वेद वेदांगों के अध्ययन के लिए जुलाई २०१८ से सप्तवर्षीय प्रकल्प आरम्भ किया जा रहा है। विशेष जानकारी व प्रवेश के लिए गुरुकुल की आचार्या डॉ. प्रियम्वदा वेदभारती से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। चलभाष-९४१२८२४४२८

शोक संवेदना

यह जानकर गहन पीड़ा का अनुभव हुआ है कि श्री जय सिंह जी गहलोत, जोधपुर का दिनांक ४ अप्रैल २०१८ को निधन हो गया। वे आर्य समाज के स्तम्भ थे। उन्होंने महर्षि दयानन्द की विचारधारा को प्रसारित करने में जो-जो कार्य किए वो स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य हैं। जिसके फलस्वरूप आज आर्य समाज को श्री सोमेन्द्र सिंह जी तथा भाई अजय सिंह एवं भरत सिंह जी जैसे युवा प्राप्त हो सके, जिन सब पर हमें गर्व है।

न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार अपनी संवेदना प्रकट करता हुआ परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान व परिवारीजनों को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करें। - अशोक आर्य, सम्पादक (सत्यार्थ सौरभ)

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर विशेष

जिन्दगी चुनें तम्बाकू नहीं

तम्बाकू एक धीमा जहर है। यह एक ऐसा पदार्थ है जो समाज को कीड़े की तरह खाए जा रहा है और लोग लगातार मृत्यु की आगोश में जा रहे हैं। तम्बाकू का सेवन करने वालों की मृत्युदर प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है। इसका एकमात्र कारण सरकार द्वारा तम्बाकू उत्पादों की रोकथाम न करवा पाना है।

आखिर सरकार आम आदमी की जिन्दगी से क्यों खिलवाड़ कर रही है। आखिर इतनी कठिन और दर्दनाक स्थिति से तम्बाकू सेवनकर्त्ता गुजर रहे हैं, उसके लिए सरकार ढिलाई क्यों बरत रही है? तम्बाकू व उससे बने उत्पाद हमारे जीवन के लिए बहुत घातक हैं और साथ-साथ हमारे पर्यावरण व हमारे साथ रहने वालों के लिए भी घातक हैं। इसके संदर्भ में छत्रपति शाहू जी महराज चिकित्सा विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉक्टर रमाकान्त का कहना है 'प्रत्यक्ष धूम्रपान की अपेक्षा अप्रत्यक्ष धूम्रपान व्यक्ति के लिए अधिक हानिकारक होता है।'

अभी हाल ही में हुए टोबाको अडल्ट सर्वे २०१० में यह साबित हो चुका है कि पहले की अपेक्षा तम्बाकू उत्पादों के सेवन करने वाले लोगों की संख्या बढ़ी है और सबसे खास बात यह है कि इनमें युवाओं की संख्या का प्रतिशत सबसे अधिक है। यही कारण है कि हम तम्बाकू उत्पादों द्वारा होने वाली मृत्युदर पर नियंत्रण नहीं कर पा रहे हैं।

तम्बाकू द्वारा होने वाले नुकसान

तम्बाकू हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत घातक है। इसके हानिकारक प्रभाव को बताते हुए वर्ष १९९४ में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा पुरस्कृत डॉ. रमाकान्त का कहना है कि 'तम्बाकू के सेवन के दूरगामी परिणाम बहुत ही जानलेवा होते हैं। इसके सेवन से मुँह की मांसपेशियाँ सिकुड़ने लगती है, दांत सड़ने लगते हैं और इससे गले, जीभ, मुँह, फेफड़े आदि के कैंसर होने की संभावना ८० फीसदी बढ़ जाती है, यहाँ तक कि इसके सेवन से शरीर के किसी अंग पर इसका हानिकारक प्रभाव हो सकता है।'

युवावर्ग का धूम्रपान में संलिप्त होना

हमारे देश का भविष्य और समाज की आन-बान-शान समझे जाने वाला युवावर्ग धूम्रपान व तम्बाकू सेवन में सबसे आगे हैं जैसा कि सर्वे द्वारा स्पष्ट है। युवा जो कि अशिक्षित होने के कारण या फिर फैशन, शौक या अपने आपको आधुनिक दर्शाने के लिए सिगरेट या तम्बाकू का सेवन आरम्भ कर देते हैं। और यह उम्र १३ से १८ वर्ष के बीच की होती है। क्योंकि ज्यादातर लोग युवावस्था में ही धूम्रपान करना प्रारम्भ करते हैं। युवाओं द्वारा खुलेआम सिगरेट के कश सार्वजनिक स्थान पर लगाए जा रहे हैं जिससे वहाँ उपस्थित सभी लोगों को नुकसान हो रहा है और सरकार मूकदर्शक बनी खड़ी है।

सरकार द्वारा तम्बाकू उत्पाद रोकने के लिए जो नियम बनाए गए हैं वे भी इसको रोकने के लिए कारगर नहीं साबित हो पा रहे हैं। सिगरेट एवं अन्य तम्बाकू उत्पाद अधिनियम १९९२ के सेक्शन ५(अ) के अन्तर्गत 'कोई भी अवयस्क (१८ से कम उम्र के बालक) को तम्बाकू उत्पाद बेचने व खरीदने पर प्रतिबन्ध है। इसके साथ ही संदेह होने पर कि खरीददार नाबालिग है तो दुकानदार ग्राहक से १८ वर्ष की उम्र होने का उपयुक्त साक्ष्य देने का भी अनुरोध कर सकता है।'

परन्तु आजकल धड़ल्ले से खुलेआम बालक को, जो स्कूल में पढ़ने वाले, गाँवों में खेलने वाले हैं आराम से दुकान पर तम्बाकू उत्पाद बेचते, खरीदते व कश लगाते हुए देखे जा सकते हैं। जिनके हाथ में किताबें और कलम होनी चाहिए वह मौत का सामान लिए बेच रहे हैं, और परिवार के लोग इसे व्यवसाय मानकर बच्चे का तम्बाकू उत्पाद की दुकान पर बैठना एक सराहनीय कदम मानते हैं। यह सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का उल्लंघन नहीं है तो क्या है? क्या इसको रोकने में सरकार अपने आप को असहज महसूस कर रही है?

अतः यह स्पष्ट है कि तम्बाकू का सेवन हमारे व हमारे जीवन के लिए बहुत ही घातक होता है खासकर युवाओं के लिए

जो अपने आपको युवावस्था में संभाल नहीं पाते हैं और चोरी छिपे उसका प्रयोग प्रारम्भ कर देते हैं। अतः इसके लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं। -

१. यदि आप धूम्रपान के आदी हैं तो आप उसको धीरे-धीरे कम करने का प्रयास करें और फिर छोड़ दें।

२. कभी भी बच्चों के सामने धूम्रपान या गुटखा का सेवन न करें क्योंकि आपको देखकर वह भी इस लत के शिकार हो सकते हैं।

३. युवाओं को तम्बाकू उत्पाद से दूर रखें।

४. ग्राहक यदि नाबालिग है तो दूकानदार तम्बाकू व उससे बने उत्पाद कतई न दें।

५. समय-समय पर इससे होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में युवाओं को बताएँ। जिससे वे अगर चोरी छिपे सेवन कर रहे हों तो इसके दुष्प्रभावों का चिन्तन कर इस लत से दूर हो जाएँ।

६. समय-समय पर आयोजित की जाने वाली तम्बाकू निषेध की गोष्ठियों में अवश्य भाग लें जिससे उन मुद्दों पर आपकी समझ बढ़ेगी व आप भी किसी को अच्छी तरह से इसकी हानियाँ बता पायेंगे।

अतः आपसे सादर अनुरोध है कि युवाओं को तम्बाकू उत्पादों से दूर रखें क्योंकि हमारे देश का भार इन्हीं युवा कन्धों पर है और जिनको कमजोर न बनाकर सशक्त और मजबूत बनाना है तथा विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर आप सभी यह संकल्प लें कि न तो तम्बाकू का सेवन करेंगे और जो कर रहे हैं उन्हें इसके दुष्प्रभाव की जानकारी देते हुए छुड़वाने का प्रयास करेंगे तथा छुड़वाने में पूरा सहयोग करते हुए इस मुहिम को जारी रखेंगे और सब मिलकर कहेंगे 'जिन्दगी चुनो, तम्बाकू नहीं'।

(प्रस्तुत लेखक सी.एन.एस. द्वारा आयोजित छः दिवसीय 'अधिकार व दायित्व' शिविर में प्रशिक्षित एक प्रशिक्षार्थी आनन्द पाठक द्वारा लिखा गया है)

जीवन की सार्थकता विशाल हृदय से

कथा सरित

भारत की गरिमा रही है कि उसने युद्ध के समय भी मानवता को स्थिर रखा है ऐसा ही एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है।

पेशवा वाजीराव की सेनाओं ने हैदराबाद के निजाम की सेनाओं को चारों ओर से घेर लिया था निजाम की सेनाओं का रसद, पानी समाप्त होने को था। इधर ईद का अवसर आ गया। निजाम ने एक पत्र लिखकर भिजवाया। पत्र में लिखा था- 'हमारे पास अब जरा भी अनाज नहीं रहा है कल ईद है क्या इस मौके पर हमारे सैनिकों को भूखा रखना चाहते हो?'

पेशवा को लिखा पत्र उन्होंने पढ़ा और अपने सेनापति को बुलाकर विचार विमर्श किया। सेनापति ने कहा अब शत्रु शिकंजे में है। इसलिये उसकी पराजय हर हालत में निश्चित है। हमें कुछ सहयोग करने की जरूरत नहीं है।

पेशवा ने सेनापति से कहा- आप ठीक कहते हैं निजाम हमारा शत्रु है और इस समय वह फंसा हुआ है हमारी विजय निश्चित है। उसकी हार भी निश्चित है किन्तु हम मनुष्य हैं। भूखी सेना पर आक्रमण करके विजय प्राप्त करना शूरता या वीरता नहीं है। दुनिया को ज्ञात होना चाहिये कि महाराष्ट्र के वीर सैनिक समान बल वालों से लड़कर ही विजय प्राप्त करना चाहते हैं। वे क्रूर और क्षुद्र हृदय नहीं हैं जो भूखों पर आक्रमण करें। फिर ईद उनका पर्व है तो हमें उनका सहयोग अवश्य करना चाहिये। उन्होंने सेनापति को आदेश दिया कि ईद के पवित्र दिन से पूर्व ही निजाम के यहाँ अनाज भेजने की व्यवस्था की जाय।

तुरन्त अनाज से भरी बैलगाड़ियाँ पेशवा के सैनिकों ने निजाम के सैनिकों के लिये भेजना आरम्भ कर दिया।

भारत की इस गरिमा विशाल हृदयता को देखकर निजाम भी आश्चर्यचकित था।

सत्यार्थ-पीयूष

कृतित्व प्रमाण है कर्त्ता का

किसी चैतन्य सत्ता के अस्तित्व से इन्कार करने वाले बन्धुओं को विज्ञान द्वारा खोजे नियमों पर ही विचार कर लेना चाहिए, जिन्हें वे सर्वोपरि व स्वनिर्मित मानते हैं। महान् वैज्ञानिक न्यूटन के गति का नियम कहता है कि- 'कोई वस्तु अपनी स्थित अथवा गतिज अवस्था में ही रहेगी जब तक कि उस पर बाह्य बल का प्रयोग न किया जावेगा।' विचारणीय है कि यह जगत् गतिशील है तो इसे गति किसने प्रदान की? आधुनिक विज्ञान में जिन कणों को परमाणु कहा जाता है उस परमाणु की रचना देखिये। इसके केन्द्रक में प्रोटोन तथा न्यूट्रॉन हैं। इनके चारों ओर इलेक्ट्रोन अपनी कक्षाओं में चक्कर लगा रहे हैं। इन्हीं इलेक्ट्रोनों की संख्या व गति से परमाणु का अस्तित्व व क्रियाशीलता है। इन इलेक्ट्रोनों को सर्वप्रथम गतिमान किस बाह्य बल ने किया? विचारणीय यह है कि आज जिन फोटोन आदि कणों को विज्ञान मूलकण मान रहा है उनको सर्वप्रथम गति किसने प्रदान की? यह बल किसका है? और अगर गति आन्तरिक ऊर्जा के कारण है तो उस ऊर्जा का प्रदाता कौन है? सृष्ट्यिारम्भ में मूल कणों (पदार्थ) को क्रियाशील कौन बना सकता है? यह कार्य केवल उसी सत्ता का हो सकता है जो इन परम सूक्ष्मकणों से भी सूक्ष्म होने के साथ इस मानव कल्पनातीत ब्रह्माण्ड से भी विशाल होने के कारण ही उस सर्वत्र विरल रूप से बिखरे मूल उपादान पदार्थ को क्रियाशील कर सकता है। इसके बारे में कहा गया है-

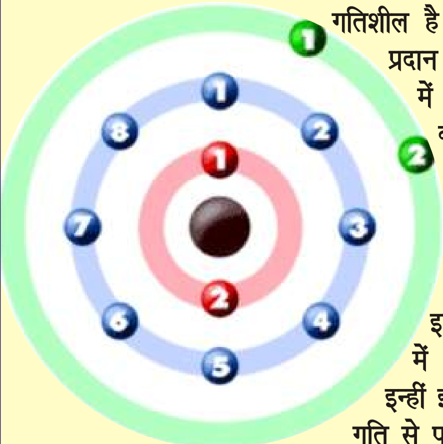

जगत् जड़ से अपने आप नहीं बनता-

उभयथा च दोषात्। - वेदान्त दर्शन २/२/१६

यदि प्रकृति में रचने की शक्ति है तब प्रलय नहीं हो सकती, यदि नाश की शक्ति है तब रचना नहीं हो सकती। यदि दोनों हैं तब कुछ भी नहीं हो सकता, अतः चेतन होने से ब्रह्म ही संसार का निमित्तकारण है।

अणोरणीयान्महतो महीयानात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्। - कठोपनिषद् २ वल्ली/मंत्र २०

अणु से अतिसूक्ष्म, बड़े से अधिक बड़ा परमात्मा इस जन्मधारी जीवात्मा के हृदय प्रदेश में विद्यमान है। यह केवल ईश्वर है। ईश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं। कोई हो ही नहीं सकता।

क्या सृष्टि अनादि है?

कर्त्ता के रूप में ईश्वर को माने बिना काम चल नहीं सकता। हाँ एक अवस्था हो सकती है कि जगत् को अनादि मान लिया जावे तो आरम्भ करने वाले की आवश्यकता ही नहीं रहती। परन्तु संसार के सभी बुद्धिमान मनुष्य, दार्शनिक, वैज्ञानिक सृष्टि का प्रारम्भ मानते हैं। इस मानने के अनेक प्रमाण हैं, हेतु हैं। हम केवल एक वैज्ञानिक सिद्धान्त की ओर संकेत करेंगे जिससे स्पष्ट होगा कि जगत् अनादि नहीं हो सकता।

उष्मागति के नियमों से पता चलता है कि संसार ऐसी अवस्था को प्राप्त होता जा रहा है जबकि सभी पिण्डों का एक जैसा अत्यन्त कम तापमान रह जायेगा और उनमें शक्ति भी शेष नहीं रहेगी तब प्राणियों का जीवन धारण करना असम्भव हो जावेगा। विज्ञान की इस खोज के प्रकाश में यह स्पष्ट है कि ब्रह्माण्ड को अनादि मानना संभव नहीं क्योंकि अगर यह अनन्तकाल से होता तो एन्ट्रोपी के नियमानुसार अब तक सभी पिण्ड समताप, शक्तिहीन हो जाते और जीवन के अनुकूल सभी स्थितियाँ समाप्त हो जातीं। पर आज सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी जिस रूप में हैं यह पक्का प्रमाण है कि कभी न कभी इनका निर्माण हुआ है।

अतएव परमेश्वर की सत्ता को नकारने के लिए यह कह देना कि विश्व सदैव से ही है, अनादि है, सत्य से मुँह चुराना मात्र होगा। अनीश्वरवादियों का दूसरा थोथा तर्क यह रह जाता है कि सृष्टि की उत्पत्ति अकस्मात् हो गई। परन्तु यह सत्य नहीं क्योंकि 'अकस्मात्' के परिणाम में नियमबद्धता, प्रयोजन, उत्कर्षता का होना संभव नहीं। दो बसों का अकस्मात् एक्सीडेन्ट हो जाता है। घायलों व मरने वालों की संख्या, घायलों के घायल अंगों की गम्भीरता आदि, ऐसे ही अकस्मात होने वाले अन्य एक्सीडेन्ट से मेल नहीं खाती। क्योंकि यह आकस्मिकता है, नियम विहीन है। परन्तु सृष्टि के अन्दर ऐसे सुनिश्चित अटूट नियम भरे पड़े हैं कि बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति कह उठता है- 'तेरी महिमा का पार न पाया'। इन सबकी विद्यमानता में अकस्मात् का राग अलापना स्वयं को धोखा देना है।

> जगत् अकस्मात् स्वयमेव नहीं-
>
> चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। - यजु. १३/४६
>
> **भावार्थ- अर्थात् निश्चय ही यह संसार कर्त्ता रहित तथा अधिष्ठाता रहित (अर्थात्) ईश्वर रहित नहीं है।**

- अशोक आर्य, नवलखा महल, गुलाब बाग

Dollar

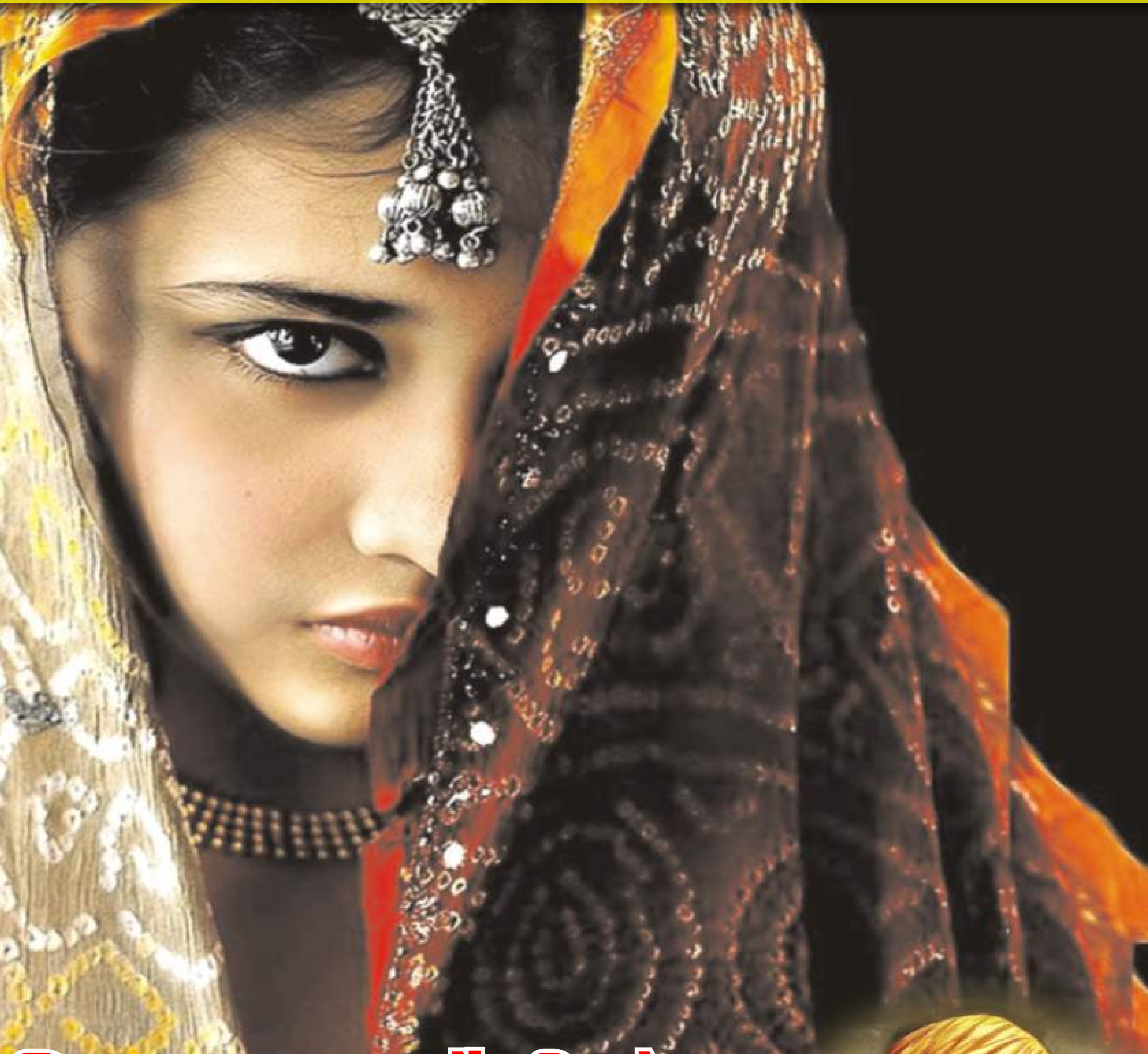

जिस घर वा कुल में स्त्री लोग शोकातुर होकर दुःख पाती हैं, वह कुल शीघ्र नष्ट–भ्रष्ट हो जाता है

स. प्र. पृ. 96

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर